ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मई 2019

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

ग्रीष्म ऋतु में

27 जून से 30 जून तक

यज्ञ एवं योग शिविर में

आप सादर आमंत्रित हैं।

(विवरण पृष्ठ 3 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

श्री रामभज नेहरा ने सुपौत्र का जन्म दिवस मनाया

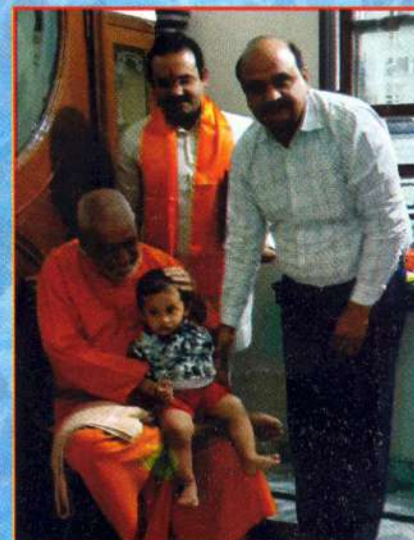

श्री रामभज जी नेहरा ने अपने सुपौत्र चि. सरताज का द्वितीय जन्म दिवस अपने निवास सैक्टर-6, बहादुरगढ़ में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर रामभज नेहरा के सुपुत्र डॉ. हर्षराज व अन्य परिवार के सदस्य उपस्थित रहे। स्वामी धर्ममुनि आत्मशुद्धि आश्रम मुख्यअधिष्ठाता ने बालक को आशीर्वाद दिया और परिवार को संदेश दिया की आप अपनी धार्मिकता व सज्जनता बनाये रखें और चिरंजीव सरताज को सुसंस्कारित बालक बनाये। इस अवसर पर परिवार कि तरफ से भरपुर दक्षिणा प्रदान की गई। यज्ञ व्यवस्था श्री ईश्वर सिंह जी आर्य द्वारा की गई और श्री ईश्वर जी आर्य द्वारा बालक को भजन द्वारा आशीर्वाद दिया गया। विधिवत, यज्ञ श्री विक्रमदेव जी आचार्य द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

आत्मशुद्धि-पथ के आजीवन सदस्य बने

1081
श्री राजेन्द्र जी
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

1082
श्री राज कुमार जी चुघ
अखबार वाले, बहादुरगढ़

1083
आर्य समाज मन्दिर
उत्तम नगर, दिल्ली

प्रिय बन्धुओं! मास मई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जून अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-ALLA0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

वैशाख-ज्येष्ठ सम्वत् 2076 मई 2019

शुल्क समाप्त कृपया शीघ्र भेजें

सृष्टि सं. 1972949120 दयानन्दाब्द 195

वर्ष-18) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-5

(वर्ष 49 अंक 5)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

❖

सम्पादकः

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक : 7100 रुपये

15 वर्ष के लिए : 1500 रुपये

पंचवार्षिक : 700 रुपये

वार्षिक : 150 रूपये

एक प्रति : 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
वह हमारा पिता, भ्राता, पुत्र और सखा है	4
चुनाव व शिष्टाचार	5
सुख-दुःख की समस्या	7
ओ३म् की उपासना	11
ईश्वर न्यायी है या दयालु?	12
दूसरों के गुण व अपने अवगुण देखने से......	15
घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना...	17
हृदय रोग पास नहीं फटकेगा	19
मेमोरी बूस्टर भी है पीपल	19
खो रहा है बचपन	20
हंसो और हंसाओ	22
पाखण्ड-खण्डन-आज की आवश्यकता	23
वज्र से कठोर तथा फूलों से कोमल थे स्वामी....	26
पुराने बुर्जुग	29
स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर	30
अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

वह हमारा पिता, भ्राता, पुत्र और सखा है

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरः,
त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरूचम्।
त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत्,
त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः॥

ऋग् 2.1.6

ऋषि:**आङ्गिरसः शौनहोत्रोभार्गवः गृत्समदः।** देवता **अग्निः।** छन्दः **भुरिक् पंक्तिः।**

(अग्ने) हे तोजोमय अग्रणी परमेश्वर! **(त्वां)** तुझ **(पितरं)** पिता को **(नरः)** मनुष्य **(इष्टिभिः)** इष्टियों द्वारा **(पूजते है)**, **(तनूरूचम्)** तनुओं को चमकानेवाले **(त्वां)** तुझे **(भ्रात्राय)** भ्रातृत्व के लिए **(शम्या)** कर्म द्वारा पूजते हैं। **(यः)** जो **(ते)** तुझे **(अविधत्)** पूजता है (उसका) **(त्वं)** तू **(पुत्र)** पुत्र **(भवसि)** हो जाती है। **(सुशेवः)** उत्कृष्ट सुख का दाता **(सखा)** सखा (त्वं) तू **(आधृषः)** आधर्षक शुत्र से **(पासि)** बचाता है।

हे अग्ने! हे तेजस्वी नायक परमेश्वर! तुम सब मनुष्यों के पिता हो, पिता के समान पालक, पोषक, शिक्षक, विपद्-निवारक, दु:ख-विदारक शत्रु-धर्षक, सुख-वर्षक, कीर्ति-वर्धक, धर्म-रक्षक हो। सांसारिक पिता तो कभी-कभी सन्तान के प्रति अपने कर्तव्य-पालन से चूक भी जाते हैं, पर तुम कभी नहीं चूकते। अतः तुम्हारे नाम पर लोग इष्टियों का आयोजन करके तुम्हारी पूजा करते हैं। तुम 'तनूरूच' हो, हमारे शरीरों को, हमारे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोशों को चमकाने वाले हो, उनमें चेतना और आभा भरने वाले हो। तुम्हारा भ्रातृत्व पाने के लिए लोग विविध सत्कर्मों द्वारा तुम्हारी पूजा करते हैं, क्योंकि तुम निष्क्रिय-उपासना करने वाले की पूजा स्वीकार नहीं करते। हे प्रभु! जो तुम्हारी सच्ची परिचर्या करता है, उसके तुम पुत्र बन जाते हो, शिशु बन उसकी गोदी में पहुँच जाते हो। वह तुम्हें दुलारता है, पुचकारता है, झुलाता है, खेल खिलाता है। वह तुम्हें अपने अंक में पाकर और तुम्हारी किलकारी सुनकर निहाल हो जाता है। हे सुखस्वरूप देव! तुम उत्कृष्ट सुख के दाता हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि सुख क्या है और दु:ख क्या है। हम जिसे सुख समझ अपने साथ चिपटाये फिरते हैं, वह परिणाम में दु:ख सिद्ध होता है, और जिसे दु:ख मानकर उपेक्षित कर देते हैं वह वस्तुतः सुख होता है। तुम स्वयं ही हमारे लिए जो सचमुच परम सुख है, उसे प्रदान कर देते हो। तुम हमारे सच्चे सखा हो, क्योंकि तुम हमें आधर्षक शत्रु की धर्षणा से बचाते हो।

जब नास्तिक शत्रु विकराल रूप धारण कर हम आस्तिकों की छाती पर चढ़ बैठता है, हमारा गला पकड़ लेता है, पेट में छुरी मारने को तैयार हो जाता है, तब तुम सिंह-गर्जना करते हुए आते हो और अपने सखा का शत्रु की यन्त्रणाओं से उद्धार करते हो। इसी प्रकार जब आसुरी मनोवृत्ति-रूप अन्तःशत्रु हमें धर-दबोचते हैं और हमारी दिव्य मनोवृत्तियों पर वज्र-प्रहार करने लगते हैं, तब भी तुम अपने सखा को निरापद करते हो। हे पिता! हे भ्राता! हे तनय! हे सखे! हमारी पूजा को और हमारे प्यार को स्वीकार करो।

- वेद मञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

चुनाव व शिष्टाचार

पिछले लगभग दो महीने से चुनाव रूपी बुखार चल रहा है। एक-दूसरे पर छींटाकशी के अतिरिक्त कुछ नेता तो शिष्टाचार की सभी मर्यादाओं को लांघ कर ऐसी-ऐसी बाते कह रहे हैं, जिसको सुनकर व पढ़कर लज्जा को भी लज्जा आ जाये। चाहे आजम खान हो या ओवेसी अपनी तरफ से अभद्र भाषा, आपसी भाईचारा व विष वमन में कोई कसर नहीं छोड़ रहे है। कोई किसी को चोर बता रहा है तो कोई किसी को पाकिस्तान का दलाल कह रहा है। महिलाओं के प्रति अभद्र टिप्पणी करना आम बात हो गई है। आप विचार कीजिए की यदि आम नागरिक किसी महिला के प्रति अश्लील बात कह दे या मात्र संकेत भी कर दे तो उसे जेल की हवा खानी पड़ेगी। लेकिन जब रक्षक ही भक्षक बन जाये जब दूध की रखवाली ही बिल्ली बन जाये तो उन परिस्थितियों में कानून की रक्षा कैसे सम्भव है। हमारे हरियाणा में एक कहावत है कि यदि किसी ने अपनी सात पीढ़ी का बही खाता चाहिए तो वह चुनाव लड़ ले। मुल्यों, सिद्धान्तों व विकास के नाम पर चुनाव लड़ना पीछे रह गया है। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप ने प्रथम स्थान ले लिया है। यद्यपि साम, दाम, दण्ड और भेद राजनीति का एक अहम् हिस्सा है लेकिन एक-दूसरे का चरित्रहनन, झुठे-सच्चे भ्रष्टाचार व चरित्र के आरोप लगाना भी राजनीति का महत्वपूर्ण भाग हो गया है। राजनेताओं का एक मात्र उद्‌देश्य रह गया है कि जीत चाहिए चाहे इसके लिए जायज व नाजायज कुछ भी करना पड़े। बूढ़ा मरे या जवान हत्या सेती काम। वर्तमान में जो चुनाव हमारे देश में हो रहे हैं ये कोई पंचायत या जिला परिषद् के नहीं हो रहे है। ये हमारे देश के सर्वोच्च चुनाव हैं। जिसके द्वारा हमारे समस्त भारत का उत्थान व भाग्य का निर्माण होना है। ये साधारण चुनाव नहीं हैं इन्हीं के द्वारा विजयी प्रत्याशी भारत वर्ष की सबसे बड़ी पंचायत के सदस्य होंगे और जो बहुमत में होगा वह अपना प्रधानमन्त्री व मन्त्री मण्डल का गठन करेगा। हमारे देश की सुरक्षा समृद्धि, व्यापार, रोजगार, अखंडता इत्यादि इसी महापंचायत अर्थात् संसद द्वारा रक्षित होती है। सारे विश्व की निगाह इन चुनावों पर है। चीन व पाकिस्तान की हार्दिक इच्छा है कि भारत वर्ष में कमजोर सरकार का निर्माण हो जाये। विदेश नीति, आर्थिक नीति व सामाजिक बुनियाद केन्द्रिय सरकार द्वारा ही पालित-पोषित होती है। एक हम हैं कि शिष्टाचार की सभी सीमाएं लांग कर उच्छृंखलता हमारे अन्दर आन घुसी है। क्या संदेश हम अपने देशवासियों को दे रहे हैं। एक-दूसरे को चोर कहना व उसका चरित्रहनन करना अब नेताओं के लिए आम बात हो गई है। अगर आपने अमेरिका व ब्रिटेन इत्यादि देशों के चुनाव भी देखे होंगे तो आप इस बात से अवश्य सहमत होंगे कि वे फिर भी मर्यादाओं का पालन करते हैं। एक श्रीमान हर बार हैदराबाद से विधायक बनता है वह इतना जहर उगलता है कि यदि वह किसी दूसरे देश में हो तो जेल की सलाखों से नहीं निकलता। पिछले दिनों हरियाणा में एक भाई ने जाति विशेष के विरूद्ध जहर ऊगला 30-35 नौजवानों की जाने भी गई अरबों रूपये की सरकारी व गैर-सरकारी सम्पति को हानि भी हुई लेकिन वही ढाक के तीन पात। हम जाती-पाती का बटवारा करके रातों-रात सुर्खियों में आकर नेता बन बैठते हैं। हमारे देश का कानून बड़ा लचीला है इसमें से कई बार तो हाथी सकुशल निकल जाता है और कई बार चिंटी फंस जाती है। देखिए शास्त्रों में वाणी के द्वारा चार पाप बताये हैं। झूठ बोलना, निन्दा करना, चुगली करना, असम्बन्ध प्रलाप व कटू वचन। आज हमारे नेता इन चारों दोषों से बुरी तरह से ग्रस्त हैं। चुनाव तो पहले भी होते थे लेकिन उस समय के नेताओं में और आज कल के नेताओं में दिन-रात का अन्तर है। पहले नेता इसका ध्यान रखते थे कि जीत हो या ना हो

आपसी सोहार्द व भाई-चारा ना बिगड़े। दीनबन्धू सर छोटूराम अपने विरूद्ध खड़े प्रत्याशी के घर गये और वहीं पर खाना खाया। सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू, चौ. चरणसिंह, लाल बहादुर शास्त्री, मोरारजी देसाई आदि नेता वाणी पर बड़ा संयम रखकर अपना सम्बोधन देते थे। हमारे नेताओं को हमारे विद्वानों, ऋषि-मुनियों व संतों के चरित्र से शिक्षा लेनी चाहिए। जब नेता लोग काम, क्रोध, लोभ व मोह को नियंत्रण करना सीख लेंगे तो अवश्य ही शिष्टाचार स्वत आ जायेगा। जब मनुष्य क्रोधित होता है तो अनाप-सनाप बकने लग जाता है। विवेक छू मंतर हो जाता है। लोभ और मोह हमारी अर्थशुचिता और न्याय को प्रभावित करता है। हमे बापू के तीन बन्दरों से ही शिक्षा ग्रहण कर लेनी चाहिए। भद्र देखें, भद्र बोलें और भद्र ही सुनें तो काफी सीमा तक चुनावी पर्यावरण जो बिल्कुल अशुद्ध हुआ पड़ा है शुद्ध हो सकता है। वेद में एक मन्त्र आता है।

ते हि पुत्रोसोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्याय।
ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्त्रम॥ यजुर्वेद 3/33

इसका भावार्थ है कि मातृ भूमि के सच्चे सपूत तो वे ही मनुष्य होते हैं जो मनुष्य समाज के अन्दर सच्चे ज्ञान की ज्योति जलाते हैं। समाज में व्याप्त अभाव, अन्याय, अज्ञान, अन्धविश्वास, स्वार्थ, नास्तिकतावाद से ग्रस्त समाज को सत्य, ज्ञान, धर्म, न्याय, समृद्धि, शिक्षा, सेवा, परोपकार, दया, क्षमा, संयम, त्याग व तपस्या से युक्त करते हैं। इसी मन्त्र में यह भी प्रार्थना की गई है कि हे परमेश्वर हमारे देश में ऐसे पुत्र (नेता) उत्पन्न हों जो राष्ट्र की दुरावस्था को सुधारने हेतु अपने सर्वस्व की आहुति प्रदान कर देवें। अगर इस तरह के भाव व विचार हमारे राज नेताओं के हों तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे राष्ट्र की पहचान सारे विश्व में अनुकरणीय होगी। ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलावें। ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में लिखते हैं कि राजा को अर्थात् राजनेताओं को काम से उत्पन्न 10 दुष्ट व्यसनों, क्रोध से उत्पन्न 8 दुष्ट व्यसनों से सर्वदा पृथक रहना चाहिए। राजा को विषयासक्त नहीं होना चाहिए। नही तो राजधर्म नष्ट हो जायेगा और इस पर भी ध्यान रखना चाहिए कि 'यथा राजा तथा प्रजा' इसलिए हमारा तो सभी पार्टियों के नेताओं से ही निवेदन है कि वे शिष्ट व्यवहार करें तभी हम जनता से भी श्रेष्ठ व्यवहार की अपेक्षा रख सकते हैं।

-राजवीर आर्य

रामदेव आर्य ने मनाया 70वां जन्म दिवस

आत्मशुद्धि आश्रम में निवास कर रहे पं. रामदेव आर्य ने वैदिक रीति से अपना जन्म दिवस मनाया ब्र. कर्ण आर्य ने यज्ञ कराया तद्पश्चात् श्री रामदेव आर्य के पौत्र ने एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। श्री सुखपाल आर्य, ब्र. नरेन्द्र व आश्रम के बालकों ने मनमोहक भजन सुनाये। श्री पुरुषार्थ मुनि जी ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। श्री सत्यपाल वत्स आर्य व श्री राजवीर आर्य ने भी उनके अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घ आयु की कामना की। स्वामी धर्ममुनि जी ने कहा कि श्री रामदेव आर्य ने केवल अपना ही जीवन बनाया है ऐसा बात नहीं बल्कि अपने परिवार को आर्य बनाया है। इस अवसर पर उनका लड़का व पुत्रवधू भी उपस्थित थे। श्री रामदेव जी द्वारा मधुर भोजन की व्यवस्था भी की गई जिसको सभी ने आनन्द से ग्रहण किया।

-विक्रम शास्त्री, व्यवस्थापक

सुख-दुःख की समस्या

-पं. चमूपति एम.ए.

15 जून पं. चमूपति जी के देहांत दिवस पर पण्डित जी की विद्या-लेखन शैली को स्मारण करते हुए अध्यात्मिक खण्ड में पण्डित जी का ही लेख दिया गया है। आप इस लेख को पढ़कर स्वयं विचार करें कि पण्डित जी एक अद्भूत महान् आत्मा थी। -सम्पादक

मस्तिष्क-सम्बन्धी विचित्रता-ऐनिड ओकलाहोमा (Enid Oklahoma) का बालक ऐनाबेल मॉरो (Annabel Morrow) बड़ा ही विचित्र बालक है। उसकी आयु अब 3 वर्ष की है। उसने इससे 18 महीने पहले पढ़ना आरम्भ कर दिया था और अब वह शरीर-विद्या, इतिहास और भूगोल के विषय में प्राय: सब-कुछ जानता है। वह लैटिन में गिनती करता है और रागी है। वह उन पुस्तकों को अनायास ही पढ़ लेता है जिन्हें चतुर्थ श्रेणी में पढ़ाया जाता है, और इससे भी अधिक यह कि वह अपने पढ़े हुए को अच्छी प्रकार से याद कर सकता है।

ऐसे ही लॉस ऐंजलस हाई स्कूल में मॉरिस मर्फे (Maurice Murphy) नाम का 8 वर्ष का एक लड़का है। परीक्षा करने से पता लगा कि उसकी मानसिक शक्ति 20 वर्ष की आयु के मनुष्यों के बराबर है, अर्थात् इस अंश में यह मस्तिष्क-सम्बन्धी अद्भुत योग्यता रखनेवालों में से एक है। उसने बहुत समय पूर्व 'कान' द्वारा गायन किया था जो उसे किसी ने सिखाया नहीं था। उसको नक्षत्र-विद्या में बड़ा आनन्द आता है और उसका मन उस विषय को पहले से ही ग्रहण करता है जिन्हें कि कॉलेज के कई विद्यार्थी समझ भी नहीं सकते।

परीक्षक कहता है कि यह बालक एक विषय में ही नहीं किन्तु सभी विषयों में प्रवीण है। वह खेलने में भी वैसी ही चतुरता प्रदर्शित करता है जैसी कि कार्य में। वह अपने आसपास रहने वाले सब लड़कों से दौड़ने, लड़ने, तैरने, डुबकी लगाने में अधिक चतुर है। इन सब बातों के होते हुए भी बालकों की भाँति वह चित्ताकर्षक भी है। वह अपने स्कूल में सर्व-प्रिय बालक है।

एवं, नैथेली क्रेन (Nathalie Crane) नाम का एक बालक है जिसकी आयु सभी 11 वर्ष की भी नहीं, किन्तु उसकी कविताओं का प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। Wonderchild नामक साम्मुख्य का विजेता ऐलबर्ट जे. हॉयत (Albert J. Hoyt) नाम का 7 वर्ष का बालक है। यह अपने ही ढंग का विचित्र सा बालक है। इसने पक्षियों के विषय में एक पुस्तक लिखी है जिसका चित्रकार भी वह स्वयं ही है। इसने कई अन्य कथाएँ और कविताएँ भी लिखी हैं। यह बालक इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, नक्षत्र-विद्या और साहित्य में अतिप्रवीण है-यह अपनी स्मृति-शक्ति द्वारा ही सब जातियों के झण्डों का चित्र खेंच सकता है। रात्रि के आकाश से वह ऐसा परिचित है जैसे अपने बाग से। वह बिना किसी कष्ट के अपने टैलिस्कोप से जहाँ चाहे वहाँ नक्षत्रों को देख सकता है। इसके अतिरिक्त वह खेलने, कूदने, दौड़ने में भी बहुत प्रविण है।

प्रचारक बालक-परन्तु इन सबसे बढ़कर जो सबको आश्चर्य में डालते हैं वे प्रचारक बालक हैं।

न्यूटन हेस्टिंग्स (Newton Hastings) नामक एक सात वर्ष का बालक है जो अपने प्रचार द्वारा मनुष्यों को स्तम्भित और चकित कर देता है। वह अपने निवास-स्थान सलसबरी से सारे राज्य में भ्रमण करता है और जब भी यह विज्ञापन दे दिया जाता है कि उसका उपदेश होगा तो गिरजा अवश्य भर जाता है। उससे हाथ मिलाने की प्रतीक्षा में लोगों की भीड़ बाहर खड़ी रहती है। वह स्कूल की द्वितीय श्रेणी में है और अभी लिखना-पढ़ना सीखने लगा है, इसलिए अपने उपदेशों को वह तैयार नहीं कर सकता। उसका बाप उन सुधरे हुए मनुष्यों में से एक है जिन पर उसके उपदेशों का प्रभाव पड़ा है। जब उसने अपने पुत्र की प्रतिभा-शक्ति को देखा तो वह गिरजे में भर्ती हो गया और अब श्रद्धा से वहाँ सेवा करता है।

दुःखवाद-हमने पहले निर्देश किया है कि ऐहिक सुख में भी दुःख की लाग पाई जाती है। निराशावादी इस सिद्धांत को अति कि सीमा तक ले जाते हैं। कुछ

समय से बौद्ध धर्म के विषय में यह कल्पना प्रचलित थी कि यह धर्म-निरपेक्ष दुःखवादी है, इसका ध्येय अभाव की प्राप्ति है। वर्तमान खोज, ने इस धारणा को निर्मल कर दिया है। आत्म-हत्या ऐहिक दुःखों का एक मात्र उपाय है-यह प्रस्तावं प्रसिद्ध जर्मन विचारक शोपन हावर का है। परन्तु उसने स्वयं आत्म-हत्या नहीं की, किन्तु समय आने पर ही मारा। यह उसके मत का स्वयं अपने जीवन से प्रत्यक्ष खण्डन है।

वेद ने आत्महत्यारे को महापापी कहा है-

असूर्या नाम ले लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥

-यजु. 40/3

घोर अन्धकार से घिरी हुई अदैव अवस्थाएँ ऐसी हैं जहाँ आत्महत्यारे मरकर भी जाते हैं।

संयमः- यदि मर जाना अभाव को प्राप्त हो जाना होता तो शोपन हावर के कथन में कुछ सत्य की मात्रा होती है। अभाव की अवस्था में सुख न सही, दुःख भी तो न होता। परन्तु यह तो आत्म-सत्ता ही बता रही है कि मरने पर आत्मा नहीं मर जाता। शोपन हावर को उसका अन्तरात्मा बता रहा था कि तू अमर है। तभी तो उसने आत्म-हत्या नहीं की। आत्म-हत्या भीरूओं का मार्ग है और भीरूता स्वयं दुःख है।

ऐहिक सुख, जिस प्रकार साधारण जनता उसे भोगती है, दुःख से शून्य नहीं। इसकी भंगुरता दुःख है। ऐन्द्रिय-सुख को स्थिर रखने का कोई साधन नहीं। खाते जाओ, पीते जाओ, कोई भोग निरन्तर भोगते जाओ, वही स्वयं रोग बन जाता है। भोग का आनन्द कभी-कभी लिया जा सकता है, निरन्तर नहीं। सुख कभी-कभी में है अर्थात् संयमपूर्वक भोग में। संयम इन्द्रियजन्य नहीं, आत्म-जन्य है। यह तो हुई संसार के भोगों की अवस्था कि वे भी बिना वशीकार के वश में नहीं आते। फिर आत्मरति का तो कहना ही क्या है! सुकरात को विष के प्याले से ग्लानि नहीं होती। प्रभु ईसा सूली पर परमात्मा की इच्छा की पूर्ति चाहते हैं। दयानन्द फफोलों-भरे शरीर में प्रसन्नवदन रहते हैं और जब इस भोग की समाप्ति होती है तो वही महात्मा ईसा के शब्द दोहरा देते हैं। कारण क्या है? इन्हें दुःख का होना तो प्रत्यक्ष है, ध्यातव्य है कि वेदों में देवताओं की भद्रा सुमति (सद्बुद्धि) की सर्वत्र प्रशंसा तथा कामना की गई है। वैदिक बुद्धिवाद का उत्कर्ष हमें वहां दिखाई देता है जब हम वेदों में सर्वत्र बुद्धि की प्रशंसा पाते हैं। यह वह दिव्य सुमति है जो हमें प्रज्ञावान, विचारशील तथा तर्कप्रणव बना कर पाखण्डों, कदाचारों तथा अन्धविश्वासों से मुक्ति दिलाती है। वैदिक प्रार्थना का सार सर्वस्व उस गायत्री मन्त्र में निहित है जहां सविता देव से उस भर्ग (तेज) की याचना की गई है जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर उन्मुख करता है।

पारस्परिक द्वेष का नाश-द्वेष को नष्ट करने की प्रार्थना के भाव के द्योतक एक सूक्त की चर्चा हम कर चूके हैं। तीसरे काण्ड का 27वां सूक्त **'योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।'** इस टेक वाले छः मन्त्रों का समूह है। स्वामी दयानन्द ने इस सूक्त को सन्ध्या के **'मनसापरिक्रमा'** प्रकरण में विनियोजित किया है। वस्तुतः ईश्वर को सर्वव्याप्त, सर्वसाक्षी तथा सभी दिशाप्रदिशाओं में विद्यमान मान कर हम पाप रूपी दुष्कर्मों से बचे रह सकते हैं। परमात्मा किसी स्थान या देश विशेष में सीमित अथवा स्थानबद्ध नहीं है अपितु उसे सर्वत्र देखा तथा अनुभव किया जा सकता है। इसी अभिप्राय से आलोच्च सूक्त में प्राची, दक्षिणा, प्रतीचि, उदीचि, ध्रुवा तथा ऊर्ध्वा इन षड् दिशाओं में विद्यमान परमात्मा को क्रमशः अग्नि, इन्द्र, वरूण, सोम, विष्णु तथा बृहस्पति-इन छः नामों से पुकारा गया है तथा सभी प्रकार की द्वेष बुद्धि को त्यागने तथा परमात्मा को विचारपति (न्यायाधीश) मान कर उनके निर्णय को सर्वात्मना स्वीकार करने की बात कही गई है।

चतुर्थ काण्ड का दूसरा सूक्त प्रजापति देवता को समर्पित है। आठ मन्त्रों के इस सूक्त में **'कस्मै देवाय हविषा विधेम'** की सूक्ति प्रत्येक मन्त्र की समाप्ति पर आती है। मन्त्रगत **'कः'** प्रजापति का वाचक है किन्तु **'कस्मै देवाय'** को पाश्चात्यों ने अनिश्चय का सूचक मान कर वैदिक ब्रह्मवाद पर आक्षेप किया और कहा कि वैदिक आर्य अपने आराध्य को लेकर निश्चयात्मक धारणा नहीं रखते थे। स्वामी दयानन्द ने और सायण ने भी 'कः' को प्रजापति परमात्मा का पर्याय बता कर इन मन्त्रों के विधेयात्मक अर्थ किये। स्वामी दयानन्द के मन्त्रार्थ का स्वारस्य इस बात में है

कि उन्होंने **'हविषा'** का अर्थ भिन्न-भिन्न मन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है: **'हिरण्यगर्भः'** से आरम्भ होने वाले मन्त्र के 'हविषा विधेम' का अर्थ 'ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्त बताया' तो **'यः आत्मदा'** मन्त्रगत **'हविषा'** का अर्थ 'आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति' अर्थात् उसी की आज्ञापालन में तत्पर रहना बताया 'यः प्राणतो' मन्त्र में आये इस पद का अर्थ 'अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञापालन में समर्पित कर विशेष भक्ति करना' कहा तो 'येन द्यौरूग्रा' मन्त्र में आये 'हविषा' का अर्थ उन्होंने 'सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करना' बताया। स्वामी जी ने उक्त चार मन्त्र ईश्वर-स्तुति, प्रार्थनोपासना प्रकरण में रखे हैं। अवशिष्ट चार मन्त्र परमात्मा की सर्वग्राही सत्ता तथा महत्ता का काव्ययुक्त शैली में उल्लेख करते हैं। वह परमात्मा ही है जिसकी महिमा से द्यौलोक, पृथ्वीलोक तथा अन्तरिक्षलोक अपना विस्तार पाते हैं। उसी की सत्ता और महिमा से सूर्य ने अपनी शक्ति का विस्तार किया है। (4/2/4) हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां, असीमित जलों के प्रवाह वाली नदियां तथा विस्तृत दिशाएं-ये सब परमात्मा की महिमा का ही गायन करते हैं-

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा
समुद्रे यस्य रसामिदाहुः।
इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै
देवाय हविषा विधेम॥

(4-2/5)

मेधा-याचना-जैसा कि हम जानते हैं वेदों में मेधा रूपी उत्कृष्ट बुद्धि की याचना अनेक मन्त्रों में की गई है। वैदिक आर्य यदि किसी बात पर गर्व करते थे तो वह 'मेधा' संज्ञक बुद्धि ही थी जो उनके कण्टकाकीर्ण मार्ग को प्रशस्त करती थी तथा उनमें धर्माधर्म, सत्यासत्य, कर्त्तव्याकर्त्तप्य का विवेक जगाती थी। यह मेधा उनके मेधावी पूर्वजों तथा दिव्यकर्मा देवताओं को प्राप्त थी और साधक भक्त उसी की याचना अग्नि नाम वाले परमात्मा से करते थे। छठे काण्ड का 108वां सूक्त मेधा देवता का है। यहां तेजस्वी अग्नि संजयक परमात्मा से प्रार्थना है कि वे उसे अविलम्ब मेधावी बनायें-

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः।
तया मामद्या मेधयाग्ने मेधाविं कृणु॥6॥108॥4

सूक्तगात मन्त्र की भावना है कि इस मेधा से हम किसी भी क्षण वंचित न हों। प्रातः मध्याह्न तथा सायं-सदा हमें मेधा बुद्धि प्राप्त हो। सूर्य की किरणों की भांति हमें जगाने वाली तथा प्रेरणा देने वाली मेधा हमारी वाणी के साथ अभिन्न रहे-

मेधा सूर्यस्य रश्मिभिर्वर्चसा वेशयामहे॥6॥108॥5

बुद्धि से विवेचित बोली गई वाणी मानव को सफलता दिलाती है। यही इस मन्त्र का भाव है।

वेदमाता से प्रार्थना- उन्नीसवें काण्ड का 71वां सूक्त केवल एक मन्त्र का है। इसमें वरदायिनी वेदमाता का स्तवन किया गया है जो प्रेरणादायिनी तथा द्विज संज्ञक बुद्धिमान् जनों को पवित्र करने वाली है। इस वेदमाता की उपासना से उपासक को आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रव्य तथा ब्रह्मवर्चस (ब्रह्म तेज, वेदाभ्यास से प्राप्त प्रतिभा) की प्राप्ति होती है) अन्ततः वह इस साधना के द्वारा ब्रह्म लोक (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है। यह मन्त्र है-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

वामदेव गान-स्वामी दयानन्द सरस्वती का आदेश है कि किसी भी उत्तम कर्म (यज्ञ, संस्कार आदि) की समाप्ति पर महावामदेव गान अवश्य किया जाना चाहिए। वामदेव्य गान के तीन मन्त्र बीसवें काण्ड के 124वें सूक्त के आरम्भ में आये हैं। मन्त्रों का देवता इन्द्र है। इन मन्त्रों में परमात्मा को रक्षक मान कर उनसे विपत्तियों से रक्षा की प्रार्थना की गई है। स्वामी जी ने सामवेदोक्त वामदेव्य गान सामान्य प्रकरण के अन्त में दिया है।

चारों वेदों में प्रार्थनाओं का अनन्त विस्तार है। इनके अध्ययन तथा विवेचन से वैदिक उपासना का स्वरूप स्पष्ट होता है परन्तु उसका भान नहीं। संसारी लोग गम कम करने को मादक द्रव्यों का आश्रय लेते हैं। कुछ समय के लिए इनसे मस्ती आ जाती है, परन्तु उस मस्ती का उतार कठोर यातना होता है। आत्मज्ञानी 'नाम खुमारी' में मस्त रहता है। उसके अन्तर्हृदय में बोध उत्पन्न हो जाता है कि मैं शरीर नहीं। सांसारिक द्वन्द्व 'मात्रास्पर्श' देह-मात्र को छू जाने वाले हैं।

इन्द्रोयेन्दी परिस्त्रव।- ऋ 9.114.1

इन्द्रियों के अधिपति के लिए आत्म-ज्ञान की गंगा बहती है।

जीवन्मुक्तः योगी संसार के कार्य से विमुख नहीं होता। आपत्तियों में आता है, झंझटों में पड़ता है, क्योंकि यह तो देह-धर्म है। शरीर-यात्रा में कर्म करना आवश्यक है। साधारण जनों में और योगी महात्मा में भेद यह होता है कि भोगी केवल इन्द्रियों के ही सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं जो चिरस्थायी नहीं और योगी को स्थिर सुख की निरन्तर अनुभूति होती रहती है। उस अनुभूति का प्रभाव इतना होता है कि ऐहिक सुख-दु:खों का उसमें लोप हो जाता है। ऐहिक सुखों में भी सुखपना उती योग के साधन 'संयम' से आता है। **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः।** (यजु. 40.1)

यह त्याग अर्थात् आत्म-वशीकार का भाव अध्यात्म-जगत् की उपज है, अनात्मा की नहीं।

वेद ने आत्म-हत्या को पाप और उसका परिणाम राक्षसी भाव ठहराकर दु:ख से बचने का उपाय बताया है-**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युपाघ्नत।** (अ.) ब्रह्मचर्य के तप से देव-स्वभाव मनुष्यों ने मृत्यु का हनन कर दिया है। यही सुख-दु:ख की समस्या का समाधान है। जब जीते-जी मनुष्य इस प्रकार मृत्यु को मार लेता है तो मरने का उसका अमृत होना स्वाभाविक हो जाता है। **य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत्। तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रोयेन्दो परि स्त्रव॥** -ऋ 9/114/1

जिसने पवित्र करनेवाले आत्म-ज्ञान के साधनों का अनुष्ठान किया, आत्मरति! जिसने मन को तेरे अर्पण किया, उसका जन्म सफल हुआ। हे आत्मसुख की गंगा! उस आत्मवशीकर्ता के चारों ओर बह।

सार

वास्तविक सत्ताः-मानसिक चिकित्सावाद वालों का मत है कि दु:ख की कोई सत्ता नहीं। केवल अपने भ्रम से मनुष्य दु:ख की सृष्टि करते हैं। निराशावादी संसार को दु:ख-ही-दु:ख का हेतु मानते हैं। यह दोनों की भूल है। तर्क भ्रम-मात्र सत्ता को भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकता। दु:खवादी शोपन हावर को आत्म-हत्या का साहस नहीं हुआ। उसका जीवन उसके मत का खण्डन था।

तार तम्यः लोगों की आयु समान नहीं, सन्तति समान नहीं, सम्पत्ति समान नहीं, स्वास्थ्य में भेद है, मानसिक योग्यताओं का भेद है। यह भी नहीं कि एक अंग की कमी दूसरे अंग की अधिकता से पूरी हो जाए। व्यक्तियों के भोग में वस्तुतः तारतम्य सुख-दु:ख की पहेली है।

कर्म का फलः- यह तारतम्य कहाँ से आता है? प्रकृतिवादी कह सकता है-परिस्थिति-भेद से। परन्तु परिस्थिति-भेद क्यों होता है? आत्मवादी आत्मा को प्रकृति का खिलौना नहीं बना सकता। परमात्मा की इच्छा-मात्र को इस तारतम्य का कारण मानना परमात्मा को या पक्षपाती मानना है या केवल तरंगी, और यह किसी धर्मवादी को अभीष्ट नहीं। धीर पुरुष अपने सुख-दु:ख का उत्तरातृत्व अपने ही ऊपर डालेंगे, अर्थात् इसे जीव के कर्मों का फल ही ठहराएँगे। वेद आत्म को **स्वधया गृभीतः** (ऋ 1.164.39) कहता है, अर्थात् जीव स्वतन्त्रता से ही बन्धन में पड़ता है।

पुनर्जन्मः- कुछ भोग ऐसे हैं जो जन्म के साथ आते हैं जैसे वंशज स्वभाव, वंशज स्वास्थ्य, वंशज सम्पत्ति आदि। ये इस जीवन के कर्म के फल नहीं, न ही इस जीवन के सभी कर्म इसी जीवन में फलित हो जाते हैं। यदि ऐसे भोगों और कर्मों को आकस्मिक मान लिया जाए तो पुरुषार्थबाद के लिए कोई यौक्तिक आधार नहीं रहता। जीवनों की एक श्रृंखला प्रतीत होती है, जो अनादिकाल से चली आती है और अनन्तकाल तक चलती जाएगी।

स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निऋतिमा विवेश।

-ऋ 1/164/32

वह माता के गर्भ में लिपटा हुआ बहुत जन्म धारण करता और भोग को प्राप्त होता है।

पुनर्जन्म के प्रत्यक्ष प्रमाण वे चमत्कारी बालक हैं जो छोटी आयु में गान, कविता तथा उपदेश आदि का कार्य निपुणता से कर सकते हैं। इनसे भी अधिक स्पष्ट और अकाट्य साक्षी उन बालकों की है जो अपने पूर्व-जन्म का वृत्तान्त सुनाते हैं, और जब उनके निर्देशानुसार उन्हें अपने पूर्व-जीवन के निवास स्थान में ले-जाकर पूछताछ की जाती है तो उनका वृत्तान्त प्रायः सत्य सिद्ध है। ऐसे उदाहरण पहले दिए जा चुके हैं।

जीवन्मुक्तिः इन सुख-दु:खों के सत्य होते हुए

भी आध्यात्मिक आनन्द का रस इतना प्रबल है कि यदि वह प्राप्त हो जाए तो भौतिक सुख-दु:ख का उस आनन्द में लोप हो जाता है। भौतिक आनन्द भी संयमपूर्वक ही भोगे जा सकते हैं, अन्यता वे स्वयं रोग बन जाते हैं, और यह संयम अध्यात्म-पक्ष की चीज है-**तेन त्यक्तेन भुंजीथा:**। (40/1) इसलिए त्यागपूर्वक भोग कर। वही संयम आत्मवशीकार है। इसी के अभ्यास से मनुष्य आत्मरति को प्राप्त करता है जिससे मुक्ति होती है।

इन्द्रायेन्दो परिस्त्रव।

हे अमर सुख की गंगा! संयमी के चारों ओर बह। यही जीवन की सफलता है।

वेद की आज्ञा स्पष्ट है-

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत्।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन
इन्द्रायेन्दो परि स्त्रव।

-ऋ 9/114/1

जिसने पवित्र करनेवाली आत्मरति के साधनों का अनुष्ठान किया, जिसने अपना मन इस आत्मरति के अर्पण किया, उसे सफल-जन्म कहते हैं। उस आत्मवशीकारी के चारों ओर अक्षय आनन्द की गंगा बहती है।

ओ३म् की उपासना

-खुशहालचन्द्र आर्य

यह ओ३म् नाम है सब से प्यारा, इसे भज लो प्रेम से सच्चे मन के द्वारा।
शुद्ध आचरण और अष्टांग योग से मोक्ष मिलता है, नहीं कोई मार्ग है न्यारा॥

ईर्ष्या, द्वेष, घृणा के भाव मिटा दो, प्रेम, दया करूणा, सहानुभूति की नदी बहा दो,
सारे विश्व को यह बतला दो, परोपकार करना ही होता सर्वोत्तम धर्म हमारा॥ यह ओ३म्....॥1॥

क्राम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को त्यागो, कर्त्तव्य पालन से कभी दूर न भागो,
राष्ट्र को जगाओ और तुम भी जागो, जिस पर रहता देश निर्भर सारा॥ यह ओ३म्....॥2॥

वेद-शास्त्रों को जो पढ़ता है, संयम, सदाचार और ब्रह्मचर्य से जो रहता है,
हृदय में श्रद्धा, प्रेम भाव जिसके बहता है, वही होता है जग में सबका दुलारा॥ यह ओ३म्....॥3॥

सन्ध्या, हवन जो नित्य करता है, दीन-दु:खियों के दु:खों को जो हरता है,
वह कभी किसी से नहीं डरता है, ईश्वर देता रहता उसे सदा सहारा॥ यह ओ३म्....॥4॥

ईमानदारी से जो व्यापार करता है, नि:स्वार्थ भाव से जो व्यवहार करता है
जो हंसते-हंसते सब दु:खों को सहता है, उसका बनता है जीवन सुखमय सारा॥ यह ओ३म्....॥5॥

योग-आसन व ध्यान जो करता है, शुद्ध, सात्विक भोजन का पान जो करता है,
स्वाध्याय से प्राप्त जो ज्ञान करता है, उसे आनन्द मिलता जग में सबसे न्यारा॥ यह ओ३म्....॥6॥

व्यक्ति जो संयमी, सदाचारी है, वह गृहस्थी होता हुआ भी ब्रह्मचारी है,
इसीलिए राम-कृष्ण की महिमा न्यारी है, वे ईश्वर सम कहलाये अपने चरित्र के द्वारा॥ यह ओ३म्....॥7॥

जो ओ३म् नाम नित्य जपता है और जीवन में शुभ, पवित्र कर्मों को जो करता है,
''खुशहाल'' निश्चय से कहता है, वही पाता है मोक्ष जो अन्तिम होता लक्ष्य हमारा। यह ओ३म्....॥9॥

c/o गोविन्दाराम आर्य एण्ड सन्स, 180, एम.जी. रोड, प्रथम मंजिल, दिल्ली-110007
मो. 9830135794

ईश्वर न्यायी है या दयालु?

- पं. सिद्धगोपाल कविरत्न

विमला-तुम्हारा कल का प्रश्न था दया और न्याय दोनों गुण ईश्वर में साथ-साथ कैसे रह सकते हैं? वास्तव में दया और न्याय दोनों साथ-साथ ही रहते हैं। अन्तर केवल यह हैं, 'दया' दयालु ईश्वर अपनी तरफ से करता है और 'न्याय' वह जीवों के कर्म के अनुसार करता है। जैसे किसान ने खेत में दाना बोया, उस एक दाने की एवज में सैकड़ों दाने भगवान् ने उसे दिये। यह उसकी 'दया' है अब न्याय उसका यह है, जैसा तुमने बोया वैसा ही काटोगे। जैसा करोगे वैसा ही भरोगे। चना बोकर चना प्राप्त हो सकता है गेहूँ नहीं, यही उसका 'न्याय' है। एक पिता के चार पुत्र हैं। चारों को उसने एक-एक हजार रूपया दिया। यह उसकी पुत्रों पर 'दया' है। परन्तु यदि कोई दूसरे पुत्र से रूपये जबरदस्ती छीन लेता है, तो पिता रूपये छीनने वाले पुत्र को दण्ड देता है। यह उसका 'न्याय' है। रूपयों का देना पिता का अपनी ओर से है इसलिए वह 'दया' और दुष्ट पुत्र को दण्ड देकर अधिकारी को उसका अधिकार दिलाना पिता का 'न्याय है। एक राजा डाकू को प्राण दण्ड देता है, यह उसका 'न्याय' है, प्राण-दण्ड देकर डाकू द्वारा पीड़ित मनुष्यों की वह रक्षा करता है यही उसकी 'दया' है। यदि राजा डाकू को छोड़ देता है तो यह उसका 'अन्याय' है। वास्तव में जो मतलब 'दया' से निकलता है वही 'न्याय' से निकलता है जहाँ 'न्याय' न हो वहाँ दया कैसी? क्या अन्यायी मनुष्य भी कभी दयालु हो सकता है? 'अन्यायी' तो स्वार्थी होता है, दयालु नहीं परमात्मा न्यानकारी होने से दयालु है। उसने जीवों के कल्याण के लिए सृष्टि बनाई, यह उसकी पूर्ण 'दया' है। ईश्वर कर्मानुसार प्रत्येक प्राणी को फल दे रहा है, यह उसका 'न्याय' है।

कमला-जब कोई मनुष्य बुरा कर्म करता है, तो उसको परमात्मा जानता है या नहीं? यदि जानता है, तो उसे तत्काल ही क्यों नहीं रोक देता?

विमला- परमात्मा प्रत्येक को बुरे कर्म से तत्काल ही रोकता है। इसका सबूत यह है, जब मनुष्य बुरा कर्म करने को उद्यत होता है तो उसे अन्त: करण में उसी समय भय, लज्जा, शंका के भाव उत्पन्न होते हैं और अच्छे कर्म करता है तो हृदय में उसी समय आनन्द उत्साह उत्पन्न होता है। यह सब परमात्मा की ओर से ही होता है। इसी को अन्त:करण की आवाज कहते हैं। मनुष्य ही क्या पशुओं तक के अन्त: करण में बुरा कर्म करने पर भय, लज्जा, शंका उत्पन्न होती है। कुत्ते को जब रोटी का टुकड़ा डाला जाता है, तो वह उसी जगह उस टुकड़े को आनन्दपूर्वक खाता रहता है, और पूँछ हिलाता जाता है। वही कुत्ता जब रोटियाँ चुराकर भागता है, तो न पूँछ हिलाता है और न खुला खाता है। बल्कि छिपकर आड़ में खाता है, क्यों? इसलिए कि वह जानता है, यह पाप है, चोरी है इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा बुरे कर्म करने से हरेक प्राणी को उसी वक्त रोकता है। हाँ इतनी बात अवश्य है परमात्मा किसी जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता को नहीं छीनता। स्वतन्त्रता छीन भी कैसे सकता है, जबकि जीव 'अनादि' है और कर्म करने में स्वतन्त्र है? दूसरे यदि ईश्वर जीवों की स्वतन्त्रता छीन भी ले तो वे जीव न तो जीव ही रहेंगे और न उनकी उन्नति ही हो सकेगी। जैसे यदि किसी स्कूल में लड़कों का इम्तिहान हो रहा है, मास्टर तमाम लड़कों पर निगरानी रख रहा है कि कोई लड़का किसी का सवाल न देख ले। कई लड़के उत्तर गलत भी लिख रहे हैं। मास्टर गलत उत्तर लिखते हुए भी देख रहा है। परन्तु वह उस समय लड़कों को रोकता नहीं, लिखने देता है। वह उनकी स्वतन्त्रता में बाधा नहीं ड़ालता। यदि मास्टर समस्त लड़कों'को स्वयं ही सही उत्तर लिखा दे, तो इसमें लड़कों की व्यक्तिगत उन्नति क्या हो सकती है? ओर उनको पढ़ाकर परीक्षा लेने का अर्थ ही क्या निकल सकता है? ऐसी अवस्था में वे विद्यार्थी, ही न रहेंगे, बल्कि मशीन के पुर्जे जैसे बन जायेंगे। मास्टर का काम तो लड़कों को अच्छी तरह पढ़ा देना है, पढ़कर प्रश्नों का सही उत्तर लिखना लड़कों का काम है। इसी प्रकार परमात्मा का काम तो जीवों को वेद द्वारा विधि-निषेध के कर्मो का ज्ञान प्राप्त करा देना है, अच्छे या पुरे कर्म करना नहीं। कर्म तो जीव स्वतन्त्रता से ही करेंगे। यदि ज्ञान के अनुकूल कर्म करेंगे, तो सुख प्राप्त करेंगे और अज्ञान के अनुकूल करेंगे तो दु:ख प्राप्त करेंगे। वेद ज्ञान के अतिरिक्त प्रत्येक प्राणी के अन्त: करण में भी बुरा कर्म

न करने का आदेश परमात्मा की ओर से अवश्य होता है। उस आदेश पर प्राणी ध्यान दे या न दे, यह उसकी अपनी बात है। परमात्मा का बुरे कर्मों से रोकना इसी को कहा जाता है। जीवों के कर्म करने की स्वतन्त्रता छीन लेना रोकना नहीं।

कमला-अच्छा, परमात्मा कर्मों का फल तत्काल क्यों नहीं देता?

विमला- प्रत्येक कर्म का उसी समय फल देना बन भी कैसे सकता है? कल्पना करो कि परमात्मा ने किसी मनुष्य के कर्म पर प्रसन्न होकर उसे तत्काल फल दिया कि यह मनुष्य एक साल तक आनन्द भोगेगा। अब दूसरे दिन उसने बुरा कर्म किया उसका परमात्मा ने फल दिया कि एक वर्ष दु:ख भोगेगा। अब सोचो, यदि यह मनुष्य एक साल तक आनन्द भोगता है तब तो उसने पहले कर्म का फल प्राप्त कर लिया और परमात्मा का नियम भी पूर्ण हो गया अब इस साल के बीच में चाहे वह कितने ही बुरे कर्म करे, उसका फल इस साल नहीं मिलना चाहिए। यदि इसी साल बुरे कर्म का भी फल मिलता है, तो पहले कर्म की एक साल की आनन्द भोगने की आज्ञा ईश्वर की टूट गई। जब जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, तो कभी बुरे कर्म करेगा और कभी अच्छे कर्म करेगा ही यदि ईश्वर सबका तत्काल फल देता रहे, तो न तो बुरे कर्मो के फल की व्यवस्था बन सकेगी और न भले कर्मो के फल की व्यवस्था बन सकेगी। क्योंकि किसी भी कर्म के फल का समय पूर्ण न हो सकेगा। इसलिए परमात्मा प्रत्येक कर्म का फल अपनी नियम व्यवस्था के अनुसार ही देता है।

कमला-यह संसार में जो लाखों योनियाँ हैं, क्या कर्म के फल से ही प्राप्त होती हैं?

विमला-दुनियाँ में दो प्रकार की योनियाँ है। 'भोग योनि' और 'उभय योनि'। यह सब जीवों को कर्मानुसार ही प्राप्त हुई है।

कमला-'भोग योनि' और 'उभय योनि' से क्या तात्पर्य है?

विमला-'भोग योनि' वह है जिसमें जीव सुख दु:ख भोगते हैं परन्तु भविष्य के लिए कोई कर्म नहीं करते। जैसे पशु-पक्षी आदि। 'उभय योनि' मनुष्य योनि है। इसमें मनुष्य सुख दु:ख रूप फल भी भोगते हैं और भविष्य के लिए अच्छे बुरे कर्म भी करते हैं।

कमला-मनुष्य को 'उभय योनि' में क्यों माना गया है?

विमला-पशु पक्षियों को केवल खाने की चिन्ता रहती है, पदार्थो के उत्पन्न करने की नहीं। उनका जन्म परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार केवल भोग भोगने को ही है, कमाने को नहीं। देखो! गेहूँ! चना, जौ, आदि अनाज सब पशु-पक्षी खाते हैं। परन्तु वे उत्पन्न नहीं कर सकते क्योंकि उनमें विचार-शक्ति नहीं है। परन्तु मनुष्य अपनी विचार शक्ति के आधार पर पशुओं से काम लेकर अनाज उत्पन्न कर सकता है। विचारशक्ति' होने के कारण ही इसे 'उभय योनि' कहा गया है। यह पदार्थो का भोग भी करता है और उन्हें उत्पन्न भी करता है। अपनी विचार शक्ति के सहारे मनुष्य समस्त पक्षियों को अपने काबू में कर लेता है। एक गड़रिए के आधीन हजारों भेड़ें रहती हैं। एक ग्वाले के आधीन हजारों गायें रहती हैं। मनुष्य शेर और बड़े-बड़े खूँखार जानवरों को सर्कस में नाच नचा देता है। जानवरों से ही क्या अपनी विचारशक्ति के कारण पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि तत्वों से भी मनमाना काम ले लेता है। ईश्वर ने मनुष्य को पक्षियों जैसे पर नहीं दिये जो उड़ सके परन्तु इसने हवाई जहाज बना लिये। पानी में चलने के लिए मछली, कछुओं जैसे शारीरिक साधन नहीं दिये, लेकिन इसने पानी के जहाज तैयार कर लिए। गिद्ध और उकाब जैसी दूर की चीज देखने वाली आँखें नहीं दीं, परन्तु इसने दूरबीन और खुर्दवीन का निर्माण कर लिया। क्या बात है? यही कि मनुष्य में विचारशक्ति है। इसलिए वह 'उभय योनि' है। यह पूर्व जन्म के कर्मो का फल भोगता है और भविष्य के लिए कर्म भी करता है।

कमला-क्या जितनी योनियाँ प्राप्त होती हैं कर्मानुसार ही होती हैं और क्या मनुष्य का जीव पशु-पक्षी आदि योनियों में भी जाता है?

विमला-हाँ, समस्त योनियाँ स्वकर्मानुसार ही प्राप्त होती है। जीव समस्त योनियों में आता जाता है। मनुष्य योनि में किये हुए कर्म ही पाप-पुण्य से सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि मैं बता चुकी हूँ कि मनुष्य में ही 'विचारशक्ति' है। जब यह 'विचारशक्ति' का दुरुपयोग करता है। तो पापी बनकर अनेक योनियों में भ्रमण करता है। ईश्वर अपनी न्याय-व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक जीव को उसके सुधार के लिए ही

योनियाँ प्रदान करता है, मनुष्य जो भी अच्छे बुरे कर्म करता है, उसके संस्कार सूक्ष्म शरीर पर पड़ते हैं। यही अच्छे बुरे संस्कार उसे उत्कृष्ट-निकृष्ट योनियाँ प्राप्त कराते हैं।

कमला-'मनुष्य योनि' कैसे प्राप्त होती है और मुक्ति कब प्राप्त होती है?

विमला-जब पाप की अपेक्षा पुण्य के संस्कार उत्कृष्ट होते हैं तब मनुष्य योनि प्राप्त होती है। और जब निष्पाप कर्मों के संस्कारों की प्रबलता होती है और ज्ञान हो जाता है, तो मरने पर मुक्ति प्राप्त हो जाती है। दूसरे शब्दों में जीव सांसारिक दु:खों से छूटकर परमानन्द को प्राप्त हो जाता है।

कमला-हाथी का जीव चींटी में कैसे समाता होगा? क्योंकि बड़े शरीर के लिए बड़ा जीव और छोटे शरीर के लिए छोटा जीव होता होगा?

विमला- जीव छोटे बड़े नहीं होते, जीव समस्त प्राणियों के एक जैसे हैं। शरीर में छोटा बड़ापन या भिन्नता होती है। जैसे एक ही इंजन में बहुत सी मशीनें लगी हुई हैं कोई मशीन काटती है, कोई छाँटती है, कोई छापती है, इंजन सबको एक ही प्रकार की शक्ति दे रहा है, परन्तु मशीनों के पुर्जों में भिन्नता होने के कारण कार्य भिन्न-भिन्न प्रकार के हो रहे हैं। देखो जहाँ किसी प्राणी को मनुष्य की तरह होठ मिले हैं, वहाँ वह दूध चूसता है, जहाँ चोंच मिली है वहाँ वह ठोंगे मारता है एक खिलाड़ी जब मुर्गे का चोंगा पहिन कर ठोंगे मार सकता है फिर जीव में भेद कहाँ रहा? शरीरों में ही तो भेद हुआ?

कमला-क्या जन्म कर्मानुसार होता है? यदि होता है तो जन्म के पहले कर्म कैसा? जब बिना शरीर कर्म नहीं हो सकता तो जीव के संग जब शरीर नहीं था तो उसने कर्म किया कैसे? और जन्म रूप बन्धन में फँसा कैसे?

विमला- जन्म तो अज्ञानता से होता है और योनियाँ कर्मानुसार प्राप्त होती हैं। जैसे पहले स्कूल में लड़के का दाखिल होना अविद्या के कारण है, और श्रेणियाँ प्राप्त करना कर्म या योग्यता के आधार पर है, इसी प्रकार संसार रूपी स्कूल में जीव का आना अर्थात् प्रथम शरीर धारण करना अल्पता के कारण है और अनेक श्रेणियाँ रूपी योनियों को प्राप्त करना कर्मानुसार है। दूसरे जीव का एक ही जन्म नहीं, अनन्त बार शरीर से संयोग हुआ है और होता रहेगा। अनेक जन्मों के आत्मा पर संस्कार होते हैं। यदि कहो सृष्टि के आदि में कौन से कर्मों के संस्कार थे तो उत्तर यह है कि सृष्टि के आदि में उससे पूर्व सृष्टि के संस्कार थे। सृष्टि प्रवाह से अनादि है, दिन और रात की तरह निरन्तर चक्र चला आता है और चलता जायेगा।

कमला- कुछ मनुष्यों का कहना है कि छोटे-छोटे प्राणियों में विकास होकर मनुष्य का शरीर बना है। मनुष्य सृष्टि का अन्तिम विकास है। यह कहाँ तक ठीक है?

विमला-बहिन, यह बात गलत है। यदि ऐसा होता तो मनुष्य की उपस्थिति में अन्य प्राणियों का अभाव होना चाहिए था, परन्तु देखा यह जाता है कि मनुष्य भी मौजूद हैं और अन्य छोटे-बड़े प्राणी भी मौजूद हैं। फिर कैसे माना जाय कि प्राणियों का विकास होते-होते मनुष्य का विकास हुआ है। जब अंकुर में विकास होकर वृक्ष बन जाता है फिर अंकुर कहाँ रहता है? कली में विकास होकर जब फूल बन जाता है तब कली कहाँ रहती है? दूसरी बात विचारणीय यह है कि मनुष्य के अतिरिक्त जो भी प्राणी हैं, उन सबमें 'सामान्य ज्ञान' है परन्तु 'विशेष ज्ञान' मनुष्य में ही पाया जाता है। मनुष्य में 'विशेष ज्ञान' कहाँ से हुआ? विचार शक्ति से। यह 'विचारशक्ति' अन्य प्राणियों में नहीं पाई जाती। यदि पशु-पक्षी इत्यादि में विचारशक्ति होती तो मनुष्य उन पर शासन नहीं कर सकता था। देखो यह बात मानी हुई है कि अभाव से भाव कभी नहीं होता। यदि मनुष्य अन्य प्राणियों का विकसित रूप होता तो अन्य प्राणियों में विचार-शक्ति पाई जाती, परन्तु ऐसा नहीं है। विकासवाद कहता है कि बन्दर में मनुष्य का विकास हुआ है। यदि ऐसा होता तो मनुष्य का बच्चा पानी में डाल देने से डुब नहीं सकता था। जब बन्दर से मनुष्य बना है तो बन्दर की तमाम शक्तियाँ मनुष्य में विकसित होनी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है। बन्दर के बच्चे को पानी में डाल दो तो फौरन तैर कर निकल जायेगा। परन्तु मनुष्य का बच्चा तैरना न जानने के कारण डूब जायेगा। इससे सिद्ध है कि मनुष्य, पशु-पक्षी आदि जितनी भी योनियाँ है। सबका निर्माण अपनी न्याय-व्यवस्था से कर्मानुसार भगवान् करता है।

दूसरों के गुण व अपने अवगुण देखने से ही प्रशस्त होगा विकास का मार्ग

ये उचित नहीं कि जो दोष हम में हैं उन्हें खोजकर दूर करने की अपेक्षा दूसरों पर आरोपित करते फिरें।

- सीताराम गुप्ता

एक व्यक्ति जब भी अपनी पत्नी से कुछ पूछता तो पत्नी हमेशा जवाब नहीं दे पाती। उस व्यक्ति को लगा कि उसकी पत्नी आजकल कुछ ऊँचा सुनने लगी है। उसने पत्नी के लिए हियरिंग एड खरीदने की सोची। पत्नी को बिना बताए ही वो एक डॉक्टर के पास गया और पत्नी के लिए हियरिंग एड खरीदने से पहले वह निश्चित करले कि उसकी पत्नी को सचमुच ऊँचा सुनता है और कितना ऊँचा सुनता है। डॉक्टर ने सुझाव दिया कि वो पत्नी से पचास फूट की दूरी पर खड़ा होकर उससे कुछ पूछे। यदि उसे सुनाई न दे तो क्रमश: चालीस, तीस, बीस और दस फुट की दूरी से अपनी बात पूछे।

व्यक्ति ने घर जाते ही पचास फुट की दूरी से पत्नी से पूछा, ''मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?'' पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। व्यक्ति ने फिर कुछ आगे आकर चालीस फुट की दूरी से पूछा, ''मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?'' लेकिन जवाब नदारद। व्यक्ति ने पुन: तीस फुट की दूरी से पत्नी से पूछा, 'मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या? इस बार भी पत्नी की ओर से कोई जवाब नहीं आया। व्यक्ति ने फिर बीस फुट की दूरी से पूछा, ''अरे मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?'' लेकिन इस बार भी जवाब नहीं ही आया। उसे विश्वास हो गया कि पत्नी को ऊँचा ही नहीं बहुत ऊँचा सुनता है। दस फुट की दूरी से पूछने पर भी वही स्थिति रही। अब उसने बिल्कुल पास आकर कुछ जोर से पत्नी से पूछा, ''अरे मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?'' पत्नी का जवाब था, ''मैं पाँच बार तो आपको कह चुकी हूँ कि आपके पीछे से कोई नहीं आया। क्या आपको कम सुनाई देने लगा है? कमोबेश हम सब की प्राय: ऐसी ही स्थिति रहती है। कमियाँ हममें होती हैं और उन्हें ढूंढने का प्रयास दूसरों में करते हैं।

दूसरों में कमियाँ निकालना व उनपर दोषारोपण करना हमारे लिए सामान्य सी बात होती है। मात्र अनुमान के आधार पर हम किसी को भी कठघरे में खड़ा करने से बाज नहीं आते। हद तो तब हो जाती है जब दोष हममें होता है और उसे आरोपित कर देते हैं दूसरों पर। हमें अपने सिवाय कोई भी दोषरहित नहीं लगता। हमें लगता है कि इस दुनिया में सभी लोगों में बहुत सी कमियाँ, बहुत से दोष हैं लेकिन हम पूरी तरह से निर्दोष हैं। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम तो यही होता है कि हमें अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान न होने से हम अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास ही नहीं करते और उन कमियों को बार-बार दोहराते रहते हैं। दूसरे जब हम दूसरों पर गलत दोषारोपण करते हैं तो निश्चित रूप से हमारे संबंधों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जब हम बार-बार दूसरों में दोष देखते हैं अथवा दोषारोपण करते हैं तो हमारी विश्वसनीयता भी जाती रहती है और हमारे ठीक कहने पर भी कोई आसानी से विश्वास नहीं कर पाता। हमारे लिए यही श्रेयस्कर है कि हम दूसरों में कमियाँ खोजने की बजाय अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते रहें। कहा गया है कि अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखो। हमारी आत्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य है कि हम अपने अवगुणों से मुक्त होने का प्रयास करें। ये तभी संभव है जब हमें अपने दोषों का पता हो। बीमारी का सही निदान हुए बिना उचित उपचार कैसे किया सकता है? यदि हम दूसरों में दोष खोजते रहेंगे तो अपने दोषों को देखने का न तो अवसर ही मिलेगा और न स्वदोषदर्शन में रूचि ही रहेगी। उचित तो यही है कि हम दूसरों के गुणों को अवश्य देखें और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

वास्तव में दूसरों के गुण व अपने अवगुण देखने से ही प्रशस्त होगा आत्मविकास व समाजविकास दोनों का मार्ग। हमारे संबंधों में जो विकार उत्पन्न हो जाते हैं उनसे बचने का भी ये उत्तम मार्ग है। दूसरों के गुण देखने का अभिप्राय यही है कि हम केवल अच्छी

बातों को ही देखें और उन गुणों को ग्रहण कर स्वयं में भी विकसित करें। दूसरों के प्रति हमारी ईर्ष्या इसमें बाधक बनती है। हमारी सबसे बड़ी विडंबना ये है कि हम स्वभाव से ही अपने प्रतिद्वंदी या विरोधी के सद्गुणों व उसके मित्रों को, चाहे वे कितने ही अच्छे क्यों न हों, अपनाने से परहेज करते हैं। यदि उनमें कोई गुण है तो उसे स्वीकार करने में हमें हिचक नहीं होनी चाहिए। जहाँ तक अपने अवगुण देखने का प्रश्न है वो इसलिए कि हम अपने अवगुणों को पहचाने बिना उन्हें दूर नहीं कर सकते। क्योंकि अपने अवगुणों को दूर करना जरूरी है इसलिए उन्हें पहचानें और दूर करने का प्रयास करें। जब तक हमें अपनी कमियों का ज्ञान नहीं होगा उन्हें दूर करने का प्रयास भी हम नहीं कर सकते। हमारी समग्र उन्नति के लिए ये अनिवार्य है। इसके अभाव में हम न तो अपने आंतरिक गुणों में ही वृद्धि कर सकते हैं और न बाहरी व्यक्तित्व में ही सुधर कर उसे प्रभावशाली बना सकते हैं।

प्राय: हमें अपने बारे में गलत धारणाएँ ही होती हैं। मुझसे बड़ा कोई चिंतक या विचारक इस धरती पर पैदा हुआ होगा या आगे पैदा होगा ये बात कैसे मान लें? हम समझते हैं कि हममें तो केवल गुण ही हैं और दूसरों में अवगुण ही अवगुण। कई बार हमें अपनी क्षमताओं के विषय में भी गलत धारणाएँ ही होती हैं। हम समझते हैं कि केवल हम ही कोई कार्य विशेष कर सकते हैं अन्य कोई नहीं। यदि कोई अन्य करेगा भी तो हमारी तरह नहीं कर पाएगा। केवल हम ही कोई कार्य सर्वाधिक उत्कृष्ट तरीके से कर सकते हैं। कई बार हम समझते हैं कि हम जो कार्य कर रहे हैं वही महत्त्वपूर्ण है अन्य कोई भी नहीं जबकि वास्तविकता इससे भिन्न या कई बार विपरीत भी होती है। यही कारण है कि इससे हम न केवल अपने दोषों, कमियों अथवा अयोग्यताओं के प्रति अनभिज्ञ रह जाते हैं और उन्हें दूर नहीं कर पाते और दूसरों में कमियां निकालते हैं।

कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से दोषमुक्त हो ही नहीं सकता। यदि हम अपने आसपास या परिवार में ध्यानपूर्वक देखें तो सब में असंख्य दोष दिखलाई पड़ेंगे। यदि घर के लोगों में अधिक दोष हैं तो इसके लिए भी हम, विशेष रूप से घर के प्रमुख सदस्य ही उत्तरदायी होते हैं। प्रजा के दोषों के लिए राजा अपने उत्तरदायित्व से इंकार नहीं कर सकता। हम परस्पर एक दूसरे के आचरण से ही वास्तविक शिक्षा ग्रहण करते हैं। सद्गुण और संस्कार मोटे-मोटे ग्रंथ पढ़ने से नहीं परिवार के सदस्यों व अपने परिवेश से ही मिलते हैं यदि उनमें हैं तो।

हमारे जननायक, हमारे शिक्षक, हमारे मित्र व हमारे परिवार के सदस्य ही हमारे रोल मॉडल होते हैं। परिवार का प्रमुख भी परिवार के लिए रोल मॉडल होता है। यदि हमारे रोल मॉडल ही दोषपूर्ण हैं तो हम भी अवश्य ही उन दोषों को ग्रहण कर लेंगे। एक भ्रष्ट जननायक अथवा प्रशासक चाहे जितना भी जोर लगा ले वो अपने राष्ट्र या क्षेत्र के लोगों को ईमानदार सभ्य व सुसंस्कृत नहीं बना सकता। इसके लिए भाषाण देने वाले के आचरण की शुद्धता व पवित्रता भी अनिवार्य है।

एक समझदार व जिम्मेदार व्यक्ति केवल अपने दोषों के लिए ही नहीं दूसरों के दोषों के लिए भी उत्तरदायी होता है। पूर्णत: नहीं तो आंशिक रूप से ही सही। उसे स्वदोषांधता से मुक्त होकर अपना अंतरावलोकन व मूल्यांकन कर अपने दोषों से मुक्ति पानी ही होगी। जब अपने दोषों से मुक्ति मिल जाएगी तो उनके स्थान पर अच्छी आदतों का विकास करना भी अनिवार्य है। एक अच्छा रोल मॉडल बनकर अपने देश, समाज, परिवेश व परिवार को सुधारने के लिए यह अनिवार्य है। प्रश्न उठता है कि इसकी पहल कौन करे? इस संसार को सुन्दर बनाना है तो किसी न किसी को तो यह पहल करनी ही होगी। दोषों के दुष्चक्र को तोड़ना होगा। तो हम ही क्यों न करें और आज ही क्यों न करें ये पहल? वैसे परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रमुख लोगों की ये नैतिक जिम्मेदारी बनती है। उन्हें न केवल इसका अहसास होना चाहिए अपितु इस दिशा में कार्य भी करना चाहिए।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल

- अर्जुनदेव चड्डा

माता-पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों को सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूल कर जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात वे सन्तानें विदेशों में अथवा देश के महानगरों या बड़े-बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हीं माता-पिता को घर पर अकेला छोड़ देते हैं, हताश एवं एकाकी जीवन जीने के लिए। जिनकी पथराई आंखें उनका इंतजार करती रहती हैं।

इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता-पिता जिस बहू को डोली में बैठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा-बहू अपनी निजी जिन्दगी में सब कुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर में बुजुर्ग माता-पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता-पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं और या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं।

अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता-पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र-पुत्रियों को प्रतिपल चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो, इत्यादि बातों द्वारा अपने-अपने माता-पिता को हतोत्साहित तथा उनकी उपेक्षा करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृति कि जब तक माता-पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ हैं, तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान-सम्मान एवं देखभाल और ज्यों ही वे वृद्ध सेवानिवृत अर्थात् कार्य करने में असमर्थ हुए नहीं कि वे माता-पिता सन्तानों को पर्वत से अधिक भारी लगते हैं। फलस्वरूप प्रारम्भ होता है तानों, उलाहनों के माध्यम से प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नारकीय बन जाता है।

ये चन्द उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर में हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक बाजारवाद के आधार पर विकसित भोगवादी समाज में मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थितियों पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ रही है।

आज अधिकांश घरों में बूढ़े माता-पिता, दादा-दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख सुविधाओं की चाह, स्वतन्त्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सब कुछ होते हुए भी अनुपयोगी वस्तु (कबाड़) के समान घर में चुपचाप रहने को मजबूर कर दिया है या फिर आवाज उठाने पर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है। घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनों की उस आधुनिक भौतिकवादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्व मानती हैं। अपने विकास में बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्व्यवस्था का शिकार है तो सत्य मानिये वर्तमान के युवा का भविष्य अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चो ने भी स्पष्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धवृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते-पोती, बेटा-बहू, घर-परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरन्तर बेचैनी देता है।

बुजुर्गों को उपेक्षा नहीं सम्मान चाहिए: ये वृद्ध परिवार से धन-दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं, इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें। तानों, उलाहनों, से अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाए।

समझे परिवार की अवधारणा:- बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है।

आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति-पत्नी और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा, बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता-पिता, सास-ससुर उपेक्षित कर दिए जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति-पत्नी एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता-पिता, बुजुर्ग, दादा-दादी का भी समावेश है। आज आवश्यकता है उस पुरातन धारणा को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगे तो स्वतः ही इनके प्रति आपके मन में प्रेम स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जायेंगे।

संस्कारों के संवाहक हैं बुजुर्ग: घर, परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण तथा मानव जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है। स्वतन्त्रता का अधिकार तो वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रता चाहता है, अधिकार चाहता है और युवा दम्पत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतन्त्रता के नाम पर बुजुर्ग की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतन्त्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर परिवार से वृद्धि की उपेक्षा का परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह विच्छेद की संख्या बढ़ती जा रही है, अतः स्वतन्त्रता के साथ घर में बुजुर्गों के महत्व को समझें उनकी सेवा आपका कर्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना है वृद्धावस्था:- आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम कम्प्यूटर, इंटरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज तो दे सकते हैं, अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता है। इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गो से। क्योंकि उनके पास जीवनभर का अनुभव होता है तो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाऐं है जो ये बतलाती हैं कि बुजुर्गों के अनुभव किस प्रकार उपयोगी हैं। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइक्लोपीडया होता है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें:- आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं हमारी परम्परा एवं संस्कृति में वृद्धों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उनके सम्मान सेवा की बात कही गई है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता -पिता एवं वृद्धों के प्रति कर्तव्यों का ज्ञापन है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश एवं बल ये चार वस्तुएँ नित्य प्रतिदिन बढ़ती है। मानव विधान के प्रथम निर्माता **महर्षि मनु** ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए। इसलिए हमेशा उनका सम्मान करें। वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा को रुबरु होना पड़ेगा। किसी शायर ने कहा कि **जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढ़ापा देखा।** इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्व देंगे उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप अपने माता-पिता की उपेक्षा करेगें तो आपके किशोर पुत्र-पुत्रियाँ भी आपकी उपेक्षा करेंगे। हम मनुष्य हैं केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पेंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितनी आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं। अतः अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएँ उन्हें सम्मान दें, सेवा करें।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **-विक्रमदेव शास्त्री**

हृदय रोग पास नहीं फटकेगा

-**डॉ. एस. के. आर्य,** चीफ मेडिकल ऑफिसर (आयुर्वेद) एनडीएमसी

सूर्योदय से पहले उठें : आयुर्वेद में कहा गया है कि सूर्योदय से पहले उठने वाले को हृदय रोग नहीं होता। अगर आप सुबह में 10-15 मिनट सन बाथ करते हैं तो शरीर के अंदर मौजूद कोलेस्ट्रॉल विटामिन डी में बदल जाता है। सुबह में जब तक लालिमा होती है तब तक सूर्य की किरणें तीखी नहीं होती और ये हृदय के लिए बेहद लाभकारी होती हैं। इन किरणों से हमारी हड्डियां भी मजबूत होती हैं।

हल्दी का सेवन है जरूरी :- खासकर दिल की सेहत के लिए नियमित रूप से हल्दी का सेवन बहुत जरूरी है। आयुर्वेद में कहा गया है कि लगभग 500 मिलीग्राम हल्दी रोज खाना चाहिए। हल्दी हमारे शरीर में खून का थक्का नहीं बनने देती क्योंकि यह खून को पतला करने का काम करती है। हल्दी में हल और दी है यानी समाधान देने वाली। जो हर समस्या का समाधान दे उसे हल्दी कहा गया है। इससे हमें अनेक लाभ हैं। एलोपैथिक में हृदय रोगी को डिस्प्रिन देते हैं क्योंकि यह खून को पतला करती है।

हरड़ का नियमित प्रयोग : हरड़ को आयुर्वेद में पथ्य कहा जाता है। इसे मां के समान बताया गया है जो हमारे शरीर की तमाम गड़बड़ियों को ठीक करती है। मां की तरह ही यह शरीर की सारी गंदगी साफ कर देती है। हार्ट अटैक की जांच के साधन नहीं हैं तो यह पहचानना मुश्किल होता है कि हार्ट अटैक है या गैसाइटिस क्योंकि दोनों में समान परेशानी दिखती है। लेकिन हरड़ के नियमित सेवन से शरीर के अंदर की गंदगी साफ होती रहती है और हम बीमारियों से दूर रहते हैं।

देशी गाय का दूध है अमृतः गाय का दूध पीने वाले को हृदय रोग नहीं होता। गाय के दूध में कैलशियम, मैगनिशियम और गोल्ड जैसे बहुत सारे सूक्ष्म पोषक पदार्थ होते हैं। इसी कारण गाय का दूध हल्का पीला होता है। गोल्ड हृदय को ताकत देने वाला होता है। आयुर्वेद में गाय के दूध को हल्का सुपाच्य, हृदय को बल देने वाला और बुद्धिवर्धक माना गया है। गाय के दूध और मां के दूध में काफी समानताएं हैं।

मेमोरी बूस्टर भी है पीपल

- ❑ पीपल की छाल चर्म रोगों में अत्यंत लाभकारी होती है। यह खाज-खुजली में भी बेहद लाभकारी है। छाल की राख तथा चूना व घी मिलाकर खरल में अच्छी तरह पीसकर लेप करने से लाभ होता है।
- ❑ बच्चे के मुंह में छाला पड़ जाए तो पीपल के ताजे पत्ते और छाल को महीन पीसकर उसमें मधु मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।
- ❑ रक्तातिसार में पीपल की कोमल टहनियां धनिए के बीज तथा मिश्री बराबर मात्रा में मिलाकर इसके रस का सेवन करने से लाभ होता है।
- ❑ जलने से हुए फोड़ों में पीपल की छाल का चूर्ण घी में पकाकर फोड़ों पर लगाने से लाभ होता है।
- ❑ पीपल की ताजा टहनी से प्रतिदिन दांतुन करने से दांत मजबूत होते हैं और मसूढ़ों की सूजन खत्म हो जाती है। मुंह से आने वाली दुर्गन्ध भी खत्म हो जाती है।
- ❑ पोलियों रोग में पीपल के 2-4 ताजे पत्तों को इतने ही लसूढ़े के पत्तों के साथ घोटकर छानकर नमक के साथ नित्य लेने से अति शीघ्र लाभ होता है।
- ❑ स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए पीपल के 4-6 ताजा पत्तों को 500 मि.ग्रा. दूध में अच्छी तरह उबालकर इसमें पर्याप्त मात्रा में मिश्री मिलाकर सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

खो रहा है बचपन

- आकांक्षा यादव

पण्डित नेहरू से मिलने एक व्यक्ति आये। बातचीत के दौरान उन्होंन पूछा-''पंडित जी आप 70 साल के हो गये हैं लेकिन फिर भी हमेशा गुलाब की तरह तरोताजा दिखते हैं। जबकि मैं उम्र में आपसे छोटा होते हुए भी बूढ़ा दिखता हूँ।'' इस पर हँसते हुए नेहरू जी ने कहा-''इसके पीछे तीन कारण हैं।'' उस व्यक्ति ने आश्चर्यामिश्रित उत्सुक्ता से पूछा, वह क्या? नेहरु जी बोले-''पहला कारण तो यह है कि मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, जिससे मुझे लगता है कि मैं भी उनके जैसा हूँ। दूसरा कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरना, चाँद, सितारे सभी से मेरा एक अटूट रिश्ता है। मैं इनके साथ जीता हूँ और ये मुझे तरोताजा रखते हैं। नेहरू जी ने तीसरा कारण दुनियादारी और उसमें अपने नजरिये को बताया-''दरअसल अधिकतर लोग सदैव छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसी के बारे में सोचकर अपना दिमाग खराब कर लेते हैं। पर इन सबसे मेरा नजरिया बिल्कुल अलग है और छोटी-छोटी बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता।'' इसके बाद नेहरू जी खुलकर बच्चों की तरह हँस पड़े। यहाँ बचपन की महत्ता को दर्शाती किसी गीतकार द्वारा लिखी गई पंक्तियां याद आती हैं-

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो,
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी।
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी॥

बचपन एक ऐसी अवस्था होती है, जहाँ जाति -धर्म क्षेत्र कोई मायने नहीं रखते। बच्चे ही राष्ट्र की आत्मा हैं और इन्हीं पर अतीत को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी भी है। बच्चों में ही राष्ट्र का वर्तमान रूख करवटें लेता है तो इन्हीं में भविष्य के अदृश्य बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित-पुष्पित किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश अपने देश में इन्हीं बच्चों के शोषण की घटनाएँ नित्य-प्रतिदिन की बात हो गयी हैं और इसे हम नंगी आँखों से देखते हुए भी झुठलाना चाहते हैं-फिर चाहे वह निठारी कांड हो, स्कूलों में अध्यापकों द्वारा बच्चों का यौन शोषण हो या अनुसूचित जाति व जनजाति से जुड़ बच्चों का स्कूल में जातिगत शोषण हो। हाल ही में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से नई दिल्ली में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान कई बच्चों ने बच्चों को पकड़ने वाले दैत्य, बच्चे खाने वाली चुड़ैल और बच्चे चुराने वाली औरत इत्यादि को अपने कार्टून एवं पेन्टिंग्स का आधार बनाया। यह दर्शाता है कि बच्चों के मनोमस्तिष्क पर किस प्रकार उनके साथ हुये दुर्व्यवहार दर्ज हैं और उन्हें भय में खौफनाक यादों के साथ जीने को मजबूर कर रहे हैं। यहाँ सवाल सिर्फ बाहरी व्यक्तियों द्वारा बच्चों के शोषण का नहीं है बल्कि घरेलू रिश्तेदारों द्वारा भी बच्चों का खुलेआम शोषण किया जाता है। हाल ही में केन्द्र सरकार की ओर से बाल शोषण पर कराये गये प्रथम राष्ट्रीय अध्ययन पर गौर करें तो 53.22 प्रतिशत बच्चों को एक या उससे ज्यादा बार यौन शोषण का शिकार होना पड़ा, जिनमें 53 प्रतिशत लड़के और 47 प्रतिशत लड़कियाँ हैं। 22 प्रतिशत बच्चों ने अपने साथ गंभीर किस्म और 51 प्रतिशत ने दूसरे तरह के यौन शौषण की बात स्वीकारी तो 6 प्रतिशत को जबरदस्ती यौनाचार के लिए मारा-पीटा भी गया। सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह रहा कि यौन शोषण करने वालों में 50 प्रतिशत नजदीकी रिश्तेदार या मित्र थे। शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक व उपेक्षा शोषण के तथ्य भी अध्ययन के दौरान उभरकर आये। हर दूसरे बच्चे ने मानसिक शोषण की बात स्वीकारी, जहाँ 83 प्रतिशत जिम्मेदार माँ-बाप ही होते हैं। निश्चिततः यह स्थिति भयावह है। एक सभ्य समाज में बच्चों के साथ इस प्रकार को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

बालश्रम की बात करें तो आधिकारित आँकड़ों के मुताबिक भारत में फिलहाल लगभग 5 करोड़ बाल श्रमिक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी भारत में सर्वाधिक बाल श्रमिक होने पर चिन्ता व्यक्त की है। ऐसे बच्चों कहीं बाल-वेश्वावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढाबे में

जूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख माँगनते नजर आते हैं अथवा साहब लोगों के घरों में दास्ता का जीवन जी रहे होते हैं। सरकार ने सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा बच्चों को घरेलू बाल मजदूर के रूप में काम पर लगाने के विरूद्ध एक निषेधाज्ञा भी जारी की पर दुर्भाग्य से सरकारी अधिकारी, कर्मचारी, नेतागण व बुद्धिजीवि समाज के लोग ही इन कानूनों का मखौल उड़ा रहे हैं। अकेले वर्ष 2006 में देश भर में करीब 26 लाख बच्चे घरों या अन्य व्यावसायिक केन्द्रों में बतौर नौकर काम कर रहे थे। गौरतलब है कि अधिकतर स्वयंसेवी संस्थाओं या पुलिस खतरनाक उद्योगों में कार्य कर रहे बच्चों को मुक्त तो करा लेती हैं पर उसके बाद उनकी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। नतीजतन ऐसे बच्चे किसी रोजगार या उचित पुनर्वास के अभाव में पुन: उसी दलदल में या अपराधियों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं।

ऐसा नहीं कि बच्चों के लिए संविधान में विशिष्ट उपलब्ध नहीं है। संविधान के अनुच्छेत 15 (3) में बालकों के लिए विशेष उपलब्ध करने हेतु सरकार को शक्तियाँ प्रदत्त की गयी हैं। अनुच्छेद 23 बालकों के दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम को प्रतिषिद्ध करता है। इसके तहत सरकार का कर्तव्य केवल बन्धुओं मजदूरों को मुक्त कराना ही नहीं वरन् उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था भी करना हैं अनुच्छे 24 चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों के कारखानों या किसी परिसंकटमय नियोजन में लगाने का प्रतिषेध करता है। यही नहीं नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 39 में स्पष्ट उल्लिखित है कि बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर उन्हें ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े तो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हों। इसी प्रकार बालकों को स्वतन्त्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधायें दी जायें और बालकों की शोषण से तथा नैतिक व आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। संविधान का अनुच्छेद 45 आरम्भिक शिशुत्व देखरेख तथा 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए शिक्षा हेतु उपलब्ध करता है। इसी प्रकार मूल कर्त्तव्यों में अनुच्छेद 51 (क) में 86वें संशोधन द्वारा वर्ष 2002 में नया खंड (ट) अंत: स्थापित करते हुये कहा गया कि जो माता-पिता या संरक्षक हैं, 6 से 14 वर्ष के मध्य आयु के अपने बच्चों या, यथा-स्थिति अपने पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करें। संविधान के इन उपबन्धों एवं बच्चों के समग्र विकास को वांछित गति प्रदान करने के लिए 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन महिला और बाल विकास विभाग गठित किया गया। बच्चों के अधिकारों और समाज के प्रति उनके कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए 9 फरवरी 2004 को 'राष्ट्रीय बाल घोषणा पत्र' को राजपत्र में अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को जीवन जीने, स्वास्थ्य देखभाल, पोषाहार, जीवन स्तर, शिक्षा और शोषण से मुक्ति के अधिकार सुनिश्चित कराना है। यह घोषणापत्र बच्चों के अधिकारों के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय समझौते (1989) के अनुरूप है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं। यही नहीं हर वर्ष 14 नवम्बर को नेहरू जयन्ती को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा मुसीबत में फँसे बच्चों हेतु चाइल्ड हेल्प लाइन-1908 की शुरुआत की गई है। 18 वर्ष तक के जरूरतमन्द बच्चे या फिर उनके शुभ चिन्तक इस हेल्प लाइन पर फोन करके मुसीबत में फँसे बच्चों को तुरन्त मदद दिला सकते हैं। यह हेल्प लाइन उन बच्चों की भी मदद करती है जो बालश्रम के शिकार हैं। हाल ही में भारत सरकार द्वारा 23 फरवरी 2007 को 'बाल आयोग' का गठन भी किया गया है। बाल आयोग बनाने के पीछे बच्चों को आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगों, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा अश्लील साहित्य व वेश्यावृत्ति, एड्स, हिंसा, अवैध व्यापार व प्राकृतिक विपदा से बचाने जैसे उद्देश्य निहित हैं। बाल आयोग, बाल अधिकारों से जुड़े किसी भी मामले की जाँच कर सकता है और ऐसे मामलों में उचित कार्यवाही करने हेतु राज्य सरकार या पुलिस को निर्देश दे सकता है। इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों-कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो कहीं न कहीं इसके लिए समाज भी

दोषी है। काई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक समर्थन दिया जाये, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

कई देशों में तो बच्चों के लिए अलग से लोकपाल नियुक्त हैं। सर्वप्रथम नार्वे ने 1981 में बाल अधिकारों की रक्षा के लिए संवैधानिक अधिकारी से युक्त लोकपाल की नियुक्ति की। कालान्तर में आस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, स्वीडन 1993, स्पेन (1996), फिनलैण्ड इत्यादि देशों ने भी बच्चों के लिए लोकपाल की नियुक्ति की। लोकपाल का कर्तव्य है कि बाल अधिकार आयोग के अनुसार बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा उनके हितों का समर्थन करना। यही नहीं निजी और सार्वजनकि प्राधिकारियों में बाल अधिकारों के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना भी उनके दायित्वों में है। कुछ देशों में तो लोकपाल सार्वजनिक विमर्श में भाग लेकर जनता की अभिरूचि बाल अधिकारों के प्रति बढ़ाते हैं एवं जनता व नीति निर्धारकों के रवैये को प्रभावित करते हैं। यही नहीं वे बच्चों और युवाओं के साथ निरन्तर सम्वाद कायम रखते हैं, ताकि उनके दृष्टिकोण और विचारों को समझा जा सके। बच्चों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार एवं बालश्रम की समस्याओं के मद्देनजर भारत में भी बच्चों के लिए स्वतन्त्र लोकपाल व्यवस्था गठित करने की माँग की जा रही है।

आज जरूरत है कि बालश्रम और बाल उत्पीड़न की स्थिति से राष्ट्र को उबारा जाये। ये बच्चे भले ही आज वोट बैंक नहीं हैं पर आने वाले कल के नेतृत्वकर्ता हैं। उन अभिभावकों को जो कि तात्कालिक लालच में आकर अपने बच्चों को बालश्रम में झोंक देते हैं, इस सम्बन्ध में समझदारी का निर्वाह करना पड़ेगा कि बच्चों को शिक्षारूपी उनके मूलाधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। गैर सरकारी संगठनों और सरकारी मशीनरी को भी मात्र कागजी खानापूर्ति या मीडिया की निगाह में आने के लिए अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहिए बल्कि उनका उद्देश्य इनकी वास्तविक स्वतन्त्रता सुनिश्चित करना और होना चाहिए। आज यह सोचने की जरूरत है कि जिन बच्चों पर देश के भविष्य की नींव टिकी हुई है, उनकी नींव खुद ही कमजोर हो तो वे भला राष्ट्र का बोझ क्या उठायेंगे। अतः बाल अधिकारों के प्रति सजगता एक सुखी और समृद्ध राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है।

–राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर-342001

हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **नरेश**-यार तुझे पता है मैं सुबह बहुत देर से क्यों उठता हूँ।
  सुरेश-क्योंकि तु आलसी है।
  नरेश-नहीं यार-मेरे सपने बड़े हैं और छोटी नींद में पूरे नहीं हो पाते।
- **रमेश**-एक बात ने परेशान कर रखा है।
  सुरेश-किस बात ने
  रमेश-जब दिल में कोई हड्डी होती ही नहीं तो टूटता कहां से है।
- **हरीश** हॉस्पीटल में-यार मुकेश मुझे सारी रात मच्छरों ने काटा
  मुकेश-फिर तुने कुछ किया नहीं
  हरीश-मैंने जहर पी लिया जो काटेगा वही मच्छर मरेगा। अब काट कर दिखाये कोई।
- **पप्पु**-डॉक्टर साहब मेरी पत्नी की तबियत ठीक नहीं है क्या करूं।
  डॉक्टर-ने चैक करके कहा-इसे अस्पताल के बदले साड़ी की दुकान पर ले जाओ फिर भी आराम न आये तो सुनार की दुकान में ले जायें।
- **दो पड़ोसन**- आपस में बात कर रही थी
  पहली-यार तू अपने बच्चों को इतने जोर से क्यों डाटती है। मेरे घर तक आवाज आती है।
  दूसरी-तू समझती नहीं है। इससे पति में मेरा खौफ बना रहता है।

पाखण्ड-खण्डन-आज की आवश्यकता

- प्रताप कुमार 'साधक'

देश और समाज को धर्म का वास्तविक स्वरूप बतलाने के लिए जब वेदज्ञ योगीराज ऋषि दयानन्द सरस्वती कार्यक्षेत्र में उतरे थे, तो सर्वप्रथम हरिद्वार में कुंभ मेले पर 'पाखण्ड-खण्डिनी पताका' फहराई थी। आशय स्पष्ट था कि धर्म के सत्य स्वरूप को समझने के लिए पाखण्ड और अन्ध विश्वास से मुक्ति पाना अनिवार्य है। यही दो ऐसे प्रदूषण हैं जो धर्म को सम्प्रदाय, मजहब, पंथ और मत में परिवर्तित कर देते हैं। इसलिए महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में जहाँ दस समुल्लास वैदिक सिद्धान्तों पर लिखे, वहीं चार समुल्लासों में अन्धविश्वास और पाखण्ड-खण्डन पर लेखनी चलाई। यह सत्य ही कि बिना अवतारवाद और मूर्तिपूजा से छुटकारा पाए ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझा नहीं जा सकता है। और न उसकी उपासना ही की जा सकती है। इसी प्रकार दुष्कर्मों की क्षमा का मन स्वीकार करते हुए पापों से बचने का प्रयास नहीं किया जाएगा। चमत्कारों को स्वीकार करने से प्रकृति के अटल नियमों पर प्रश्न चिन्ह लगेंगे और किसी मनुष्य को गुरु आदि मानकर उस पर अन्धविश्वास करने से धोखा ही खाना पड़ेगा। इसके अनेक उदाहरण हमारे समाने आते रहते हैं।

यदि हिन्दू समाज के बारे में विचार करें तो उपरोक्त बुराईयों के कारण ही आज भारत में बहुसंख्यक माना जाने वाला हिन्दू समाज अनेक सम्प्रदाय, मत, पंथ में विभाजित होकर उपेक्षित और प्रताड़ित हो रहा है। देश या प्रदेश ही नहीं, एक ही हिन्दू परिवार के सदस्य अलग-अलग मतों के मानने वालों का एक इष्ट देव नहीं, एक धार्मिक पुस्तक नहीं, एक उपासना पद्धति नहीं, एक समान आहार नहीं तो, एक जैसे विचार क्यों कर हो सकते हैं? फिर विचारों की भिन्नता के रहते संगठन के स्थान पर विघटन, प्रेम और सौहार्द के स्थान पर द्वेष भाव तथा सहयोग के स्थान पर विरोध की भावना रहने पर कैसा आश्चर्य?

यह पूर्णत: सत्य है कि धर्म हिन्दू ही नहीं, मानव समाज को एक सूत्र में बांधने वाला है, जबकि सम्प्रदाय, मत, पंथ समाज को विभाजित करते हैं। अत: इनके द्वारा प्रचरित और प्रसारित पाखण्ड और अन्धविश्वासों को मिटाना आर्य समाज का प्रमुख दायितव है, क्योंकि आर्यसमाज का उद्देश्य ही संसार का उपकार करना तथा सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना है, जो समाज से ढोंग, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास को मिटाए बिना सम्भव नहीं होगा। आर्यसमाज-आन्दोलन के प्रारम्भिक काल में इस पर विशेष बल दिया गया जो धीरे-धीरे उपेक्षित होता गया। आर्यसमाज द्वारा अछूतोद्वार, विधवा-विवाह, बालविवाह, निषेध जैसे सामाजिक आन्दोलनों को तो पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि उनके पीछे राजकीय आदेशों का सहयोग था, किन्तु साम्प्रदायिक पाखण्ड और अन्धविश्वास पर अंकुश लगाने में ऐसा न होने से उसका क्षेत्र और बढ़ता ही जा रहा है। 'दैनिक जागरण' समाचार पत्र के 10 अक्टूबर 2013 के अंक में यह पढ़कर मैं स्तब्ध रह गया कि व्यक्ति ने अपने नौ मास के बच्चे की बलि दे दी। यद्यपि तांत्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत पशु-पक्षियों ही नहीं, मनुष्यों की बलि देना अथवा शरीर के किसी अंग को काटकर मूर्तियों पर चढ़ाना असामान्य घटना नहीं है, जिसमें शिक्षित तथा उच्च पदस्थ व्यक्ति भी सम्मिलित पाए जाते हैं। इसी प्रकार बाबा-वेशध ारी ठगों और दुराचारियों पर अन्धश्रद्धा रखकर न केवल आर्थिक ठगी, अपितु शारीरिक शोषण (यौनशोषण) के शिकार होने वाले पुरुषों महिलाओं की संख्या भी कम नहीं है। यद्यपि देश के कानून के अनुसार आरोप सिद्ध होने पर ऐसे पाखण्डियों को दण्ड दिया जाता है किन्तु उससे पीड़ित की पीड़ा तो समाप्त नहीं हो जाती। अत: आवश्यकता इस बात की है कि लोगों में ऐसी धार्मिक जागरूकता पैदा की जाए जिससे वे पाखण्डियों के चंगुल में फंसे ही नहीं। यद्यपि यह कार्य अत्यन्त

कठिन और श्रम-साध्य है, जिसके लिए लाभान्वित हो रहे पाखण्डियों ही नहीं, अनेकों साम्प्रदायिक गुटों का विरोध भी सहन करना पड़ेगा। तथापि ऐसे सर्वहितकारी आन्दोलन की अगुवाई देशोद्धारक, निर्भीक संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी आर्यजन न करेंगे तो कौन करेगा?

वस्तुत: आर्य समाज एक धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय आन्दोलन है, जिसका मुख्य कार्य ही कुरीतियों को हटाकर धर्म का शुद्ध मुख्य कार्य ही कुरीतियों को हटाकर धर्म का शुद्ध स्वरूप समाज के सम्मुख रखना है। इसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता विशेषकर विद्वान प्रचारक, संन्यासी और पदाधिकारी अपने दोष रहित, जीवन और नि:स्वार्थ क्रिया-कलापों से समाज में अपनी अलग प्रतिष्ठित छवि बनाएं। साथ ही आर्य समाजों व उनसे सम्बन्धित आर्य संस्थाओं को समाज सुधार का प्रबल माध्यम बनाकर संगठित रूप से पाखण्ड-खण्डन को प्रमुखता देनी होगी। किन्तु खेद है कि आर्य समाजें, संस्थाएं और सभाएं प्राय: इस अत्यावश्यक धन, सम्पत्ति एकत्र करना और कभी-कभी सम्मेलन करना मात्र रह गया है। अत: प्रभावशाली राजनेता तथा धनी व्यक्ति इनके पदाधिकारी बन रहे हैं, जो वैदिक विचारों के प्रसारक तो क्या उनके अनुयायी भी नहीं हैं। एक प्रसिद्ध गुरुकुल सहित कुछ बड़ी आर्य समाजों के उत्सवों में मेरे प्रवचनों में पाखण्ड और अवैदिक मतों का शालीन शब्दों में किए गए खण्डन पर उनके द्वारा अप्रसन्नता व्यक्त की गई। आर्य उपदेशकों को प्राय: सलाह क्या, निर्देश दिया जाता है कि वे खण्डनात्मक प्रवचन न दें। इसके लिए वे तर्क देते हैं कि खण्डनात्मक प्रवचनों से श्रोतागण रूष्ट होकर आर्यसमाज से दूर हो जाते हैं।

किन्तु मेरा अनुभव है कि अन्य मतावलम्बियों के सत्संगों के विरूद्ध आर्यसमाज के उत्सवों में तर्क-प्रिय जिज्ञासु युवक कुछ 'नवीन' सुनने के लिए ही आते हैं और उनमें से अनेकों प्रभावित होकर सत्यता को स्वीकार भी करते हैं। मैंने अपने बाल्यकाल में आर्य विद्वानों के खण्डन-मण्डन वाले प्रवचनों को सुनने के लिए वार्षिकोत्सवों पर भारी भीड़ उमड़ते देखा है। महर्षि के खण्डनात्मक प्रवचनों को सुनने के लिए श्रोताओं की भीड़ा और उनके प्रभाव से पाखण्ड त्यागने वालों की संख्या क्या कम होती थी?

अत: मैं महर्षि के सच्चे अनुयायी आर्यों से निवेदन करता हूँ महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए सर्वप्रथम अपने संगठन को शुद्ध और सुदृढ़ करें। इसके लिए आर्यसमाजों को सक्रिय करें, उन्हें धन-लोलुप, पद-लोलुप पदाधिकारियों से मुक्त कराएं तथा साप्ताहिक अधिवेशनों व सम्मेलनों में सैद्धान्तिक प्रवचनों को वरीयता दें। आर्य विद्वानों को भी चाहिए कि वे महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाए गए वैदिक विचारों को ही स्पष्ट करें, उनके विपरीत अपने विचार न दें और न अपने को अधिक विद्वान सिद्ध करने के लिए अन्य आर्य विद्वान् की निंदा करें। मेरा मानना है कि वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों का सार ऋषि कृत सत्यार्थ-प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उपलब्ध हैं, अत: इनके पठन-पाठन एवं प्रचार की समुचित व्यवस्था करने से पाखण्ड व अन्ध विश्वास मिटाने में सहायता मिलेगी।

और अंत में एक चेतावनी आर्यसमाजियों में भी गुरुडम तथा अन्धविश्वास पनप रहा है। इसे रोके बिना तो वही बात होगी कि बड़े गौर से सुन रहा था जमाना। हमीं सो गए दास्ताँ कहते-कहते।।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
17. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
18. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश ज़ी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
74. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
76. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
77. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
78. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

वज्र से कठोर तथा फूलों से कोमल थे स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

संस्कृत साहित्य के एक उज्जवल रत्न थे आचार्य भवभूति जी। इन्होंने एक उत्तम पुस्तक की रचना की है जिसका नाम है **'उत्तर राम चरितम्'**। इस पुस्तक में भवभूति जी ने भगवान राम का उस समय का वर्णन किया है जब उनकी धर्मपत्नी सीता जी का अपहरण हो जाता है, उस समय भगवान् राम वहाँ पर वन के वृक्षों, वहाँ विद्यमान पक्षियों, पशुओं, वनस्पतियों, पर्वतों, नदी-नालों से भावविहल होकर सीता का पता पूछते हैं। उस समय सीता की एक सखी वासन्ती राम के इस कोमल रूप को देखकर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहती है:-

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादाये।
लोकोत्तराणां चेतांसी को हि विज्ञातुमर्हति॥

उत्तम पुरुषों का चरित्र वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है, उसे जानने में कौन समर्थ हो सकता है? अर्थात् वासन्ती ने जिस राम के वज्र स्वरूप को देख रखा हो वह उसके कुसुम रूप को देखकर आश्चर्य व्यक्त करती है इसी प्रकार हम जब अपने चरित नायक स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज के जीवन को देखते हैं तो हमें अनायास यह उक्ति उनके जीवन से सम्बन्धित लगती है। यदि उनके जीवन का निकटता से मूल्यांकन किया जाये तो वह यह है:-

''नारिकेल समाकारा दृश्यन्ते हि सुहज्जना:''

जिस प्रकार नारियल ऊपर से कठोर होता है, परन्तु उसके अन्दर अमृत तुल्य जल एवं कच्ची गिरी होती है। इसी प्रकार स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का जीवन नारियल की सही व्याख्या है।

''स्वामी रामेश्वरानन्द जी नि:सन्देह कर्मयोगी थे। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलनों, हैदराबाद सत्याग्रह और विशेषत: पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में अपने साहस और कार्य कुशलता का जो परिचय दिया, वह हम सब जानते हैं। जब कि पंजाब में फूट की भयंकर अग्नि अकाली भाईयों की भूल से भड़कने वाली थी तो स्वामी जी ने अपनी त्यागपूर्वक बलिदानी भावनाओं से प्रेरित होकर जो मार्ग प्रशस्त किया है उससे हमें नि:सन्देह गौरव प्राप्त हुआ है''।

कन्हैया लाल आर्य

यह उपरोक्त भावनायें थी तत्कालिन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की। यह विचार उन्होंने स्वामी रामेश्वरानन्द जी की उस सफलता पर प्रकट किये थे जब स्वामी जी पंजाब के अकालियों विशेषकर मास्टर तारा सिंह की पंजाबी सूबा बनाने की हठधर्मी के कारण अनशन पर बैठने के विरूद्ध स्वयं भी आमरण अनशन पर बैठ गये तभी मास्टर तारा सिंह अपने कुचालों में असफल हुआ था और उसी का यह परिणाम था कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने मास्टर तारा सिंह को 'जूते और झूठे बर्तन साफ करने' का दण्ड दिया था।

जन्म, बचपन एवं संन्यास की दीक्षा:- उत्तर प्रदेश का बुलन्दशहर जनपद एक ऐसा सौभाग्यशाली स्थान है जिसने आर्य समाज की कई महान विभूतियों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है उनमें से एक थे स्वनामधन्य पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज! आप का जन्म बुलन्दशहर के छोटे से ग्राम कुरैव में जाखड़ गोत्र में रामरूप नाम से हुआ। आपका बचपन अत्यन्त दु:खद वातावरण में व्यतीत हुआ। छ: मास की अवस्था में माता और दस-बारह वर्ष की आयु में पिता का देहान्त हो गया। माता-पिता के अभाव में आपके मन में वैराग्य के बीज उत्पन्न हो गये और भगवद् भजन में मग्न रहने के साथ साधु-महात्माओं का संग करने लगे। 14-15 वर्ष की आयु में घर छोड़कर संन्यास लेने का निर्णय कर लिया। साधु सन्तों की संगति में आध्यात्मिक तृप्ति नहीं हुई तो आप संस्कृत की नगरी काशी में पहुँच गये और वहां गुजराती संन्यासी स्वामी कृष्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती बन गये।

गुरु से मिलन:- आप अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए वहाँ काशी में न टिक, अपितु काशी से

प्रयाग, मथुरा, वृन्दावन होते हुए दिल्ली पहुँच गये। वहां यमुना नदी के किनारे एक सुरीली आवाज ने आपको आकर्षित किया। वहां जाकर देखा कि एक महात्मा अपने भजनोपदेश द्वारा तर्क पूर्ण बातें कर रहे हैं। वहाँ पर खड़े एक सज्जन ने इस महात्मा के बारे में बड़ी कड़वी बात कही, ''हम तो पहले ही कहें थे आर्य समाजी कुत्ता हो कुत्ता, जिनके पीछे पड़ जाये छोड़ नायं।'' यह वाक्य सुनकर स्वामी जी चौके और उस महाशय से पूछा, ''कौन है आर्य समाजी? वे सज्जन बोले, '' तोय न पतो ये जो भौंक रहयो है, ये आर्य समाजी तो है''। यह सुनकर स्वामी रामेश्वरानन्द जी सिर से पैर तक काँप गये, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था, जो आर्य समाजी की बात सुन लेता है, वह नरक में जाता है। अब बात सुनना तो दूर, आर्य समाजी के दर्शन भी हो गये, अब मेरा क्या होगा कुछ देर कि कर्त्तव्यविमूढ से खड़े रहे, आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। फिर मन में आया कि नरक में तो जाना ही जाना है, कम से कम इस बाबा की बात तो सुन लें। यह विचारकर महात्मा जी के व्याख्यान को अन्त तक सुना और सभा की समाप्ति पर उनसे प्रार्थना की कि वह मुझे अपना शिष्य बना लें। यह महात्मा कोई और नहीं थे ये थे स्वामी भीष्म जी महाराज। इस प्रकार उनकी यह यात्रा अपने गुरु के मिलन के साथ पूर्ण हो गई। ये वह स्वामी भीष्म जी थे जिन्होंने अपने जीवन के 123 वर्ष के दीर्घ जीवन में आर्यसमाज के अनेक रत्न, महापदेशक, विद्वान् एवं भजनोपदेशक दिये हैं जिनमें मुख्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी जैसे संन्यासी है।

गुरुकुल की स्थापना तथा सेवा कार्य:- स्वामी भीष्म जी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जो व्यक्ति केवल रामायण और हनुमान चालीसा का पाठ करने में ही मोक्ष मानता था अब वह न केवल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक सेनानी बना, अपितु, हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन का अगुआ नेता भी बना। नमक सत्याग्रह में जेल गये। उस समय उनका एक ही नारा था-''नमक कानून तोड़ दिया, अंग्रेजों का सिर फोड़ दिया' पुलिस ने जाल बिछाकर उन्हें उस जेल में बन्दी बनाया जिसमें पं. जवाहर लाल नेहरू बन्दी थे। स्वामी जी राष्ट्रीय आन्दोलन में तो कूद ही चुके थे, इसके साथ ही वे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल प्रणाली को भी मूर्तरूप देना चाहते थे। अपने गुरु स्वामी भीष्म जी की प्रेरणा एवं अपने प्रिय शिष्य आचार्य धर्मवीर के सहयोग से 17 अप्रैल 1939 को विधिवत करनाल के निकट घरौण्डा में एक गुरुकुल की स्थापना की। 15 अगस्त 1947 को तो देश स्वतन्त्र हो गया। धार्मिक उन्माद के कारण देश को कई यातनाओं का सामना करना पड़ा। स्वामी जी ने पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) से आए शरणार्थियों की जहाँ अन्न, वस्त्र से खूब सहायता की वहाँ अपने निकटवर्ती सारे क्षेत्र को मुसलमानों से मुक्त करा लिया।

कार्यक्षेत्र:- 1939 में जब हैदाराबाद के धर्मान्ध नवाब द्वारा हिन्दुओं के साथ अन्याय किया तो आप सैकड़ों मील दूर होते हुए भी 72 आर्यवीरों का एक जत्था लेकर नवाब की संगीनों एवं गोलियों का प्रहार सहन करने के लिए हैदाराबाद पहुँच गये। हैदराबाद जेल में आप ने बहुत सारी यातनायें सही परन्तु ऋषि दयानन्द का दीवाना बिल्कुल घबराया नहीं। नवाब के अन्याय के विरूद्ध सदैव अपने जीवन को आहुत करने में तत्पर रहा। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् 1957 में प्रताप सिंह कैरो ने अपना दमन चक्र हिन्दुओं पर चलाया तभी निर्णय लिया गया कि आर्य समाज हिन्दी और हिन्दुओं की रक्षा के लिए एक आन्दोलन चलाया जाये। उन दिनों स्वामी जी आर्य समाज गुड़गांव छावनी में वेदोपदेश कर रहे थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज एवं सभा मन्त्री पं. जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती जी के अलग-अलग दो पत्र स्वामी को मिले उसमें लिखा था:-

''हमने आपको हिन्दी सत्याग्रह का द्वितीय सर्वाधिकारी नियुक्त किया है, हम आशा करते हैं कि आप हमारी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे।'' स्वामी जी ने एक अनुशासित सिपाही की तरह यह रण निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार किया। स्वामी जी के इस आन्दोलन में कूदते ही पड़ोसी राज्यों में जोश का समुद्र उमड़ पड़ा। स्वामी जी को कई प्रकार से प्रताड़ित किया गया परन्तु यह नरपुगांव 'रूकना झुकना क्या जाने'' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा था। स्वामी जी कई मास तक जेलों में रहे। इसी बीच स्वामी आत्मानन्द जी रूग्ण हो गये। हिन्दी आन्दोलन को प्रचण्ड रूप

देने के लिए श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में नई दिल्ली में सर्वसम्मति से स्वामी जी को 'हिन्दी रक्षा समिति पंजाब' का प्रधान चुना गया। इसी बीच मास्टर तारा सिंह ने पंजाबी सूबे की मांग को लेकर आमरण अनशन की घोषणा कर दी। सभी हिन्दी प्रेमी स्तब्ध रह गये। मास्टर तारा सिंह की धमकी का उत्तर देने के लिए पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपना आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपना आमरण अनशन तब तक चालू रखा जब तक भारत सरकार की ओर से उन्हें इस विषय में आश्वस्त नहीं कर दिया कि पंजाबी सूबा नहीं बनेगा। इस विषय में तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने स्वामी जी को सम्बोधित करते हुए लिखा था।

''प्रिय स्वामी जी, आपने मेरा लोकसभा का ब्यान देखा और आज जो मैंने लोकसभा में कहा उसको भी आप कल समाचार पत्रों में देखेंगे? इससे हमारी नीति साफ मालूम हो जायेगी। मैं तो समझता हूँ कि आपको अपना अनशन छोड़ देना चाहिए और मैं आशा करता हूँ कि यह आप करेंगे।

आपका जवाहर लाल नेहरू 29.08.1961 नेहरू जी द्वारा आश्वस्त किये जाने के उपरान्त स्वामी जी ने 16 अगस्त 1961 से किया हुआ अपना आमरण अनशन 31 अगस्त 1961 को स्थगित कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज भी वह पंजाबी सूबे के सपना उन दुष्टों के द्वारा सफल नहीं हो सका। इनकी इस सफलता पर लाला राम गोपाल शाल वाले जी ने कहा था, ''मास्टर तारा सिंह जी के पंजाबी सूबे के स्वप्न को भस्मसात करने में जो शानदार काम महाराज श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने किया है, उसे भारत देश के निवासी तथा समूची आर्य जनता कभी नहीं भुलायेगी''।

संसद यात्रा-इसी बीच लोकसभा के चुनाव घोषित हो गये। क्षेत्र के लोग एवं दूसरे-जिलों तथा प्रान्तों के लोग स्वामी जी को लोकसभा में पहुँचाने के लिए कटिबद्ध हो गये। तब उन्हें अपने गुरु स्वामी भीष्म जी महाराज का आदेश मिला तो वे करनाल संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो गये। स्वामी जी ने चुनाव जीता और लोक सभा में संस्कृत भाषा में शपथ ग्रहण की। उनके सांसद बनने पर कुछ विरोधियां ने कहा, ''यह साधु संसद में जाकर क्या करेगा?'' परन्तु प्रथम अधिवेशन में ही स्वामी जी के प्रश्नों एवं भाषणों में तहलका मचा दिया। श्री स्वामी जी वेतन और भते के नाम पर जो कुछ संसद से मिलता था, वह सब अपने क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों की सहायतार्थ दे दिया करते थे। उन्होंने सांसद को फ्लैट व कौठी के रूप में मिलने वाली किसी भी सुविधा को स्वीकार नहीं किया। प्रतिदिन घरौण्डा से प्रातः काल 6 बजे चलने वाली रेलगाड़ी से दिल्ली आते थे। दिल्ली रेलवे स्टेशन से संसद भवन तक प्रायः पैदल ही आते थे और सायंकाल 6 बजे चलने वाली रेलगाड़ी से वापिस गुरुकुल घरौण्डा लौट आते थे। कभी कार्यवशात रात्रि में दिल्ली ठहरना पड़ता तो आर्य समाज सीताराम बाजार (अजमेरी गेट के पास) दिल्ली के अधिकारियों ने उनके ठहरने के लिए एक कमरा दे रखा था।

जब स्वामी जी ने संस्कृत में शपथ ली तो उनसे प्रभावित होकर 33 अन्य सांसदों ने भी संस्कृत में शपथ ग्रहण की। यह एक अपूर्व दृश्य था। स्वामी जी से पूर्व लोकसभा का समस्त साहित्य अंग्रेजी में छपता था। हस्ताक्षर पंजिका में सदस्यगण अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते थे। स्वामी जी से प्रभावित होकर अन्य कई सांसदों ने न केवल हिन्दी में हस्ताक्षर करने प्रारम्भ किये। अपितु हिन्दी में कार्यवाही भी मुद्रित होनी प्रारम्भ हो गई।

संसद का एक संस्मरण कुछ समय पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान डॉ. शिव कुमार शास्त्री जी ने मुझे सुनाया वह इस प्रकार है:-

स्वामी जी, महाराज संसद में अपना भाषण प्रारम्भ करने से पूर्व वेद मन्त्र का गान किया करते थे। आज लोकसभा के साहित्य में सैकड़ों वेद मन्त्र मुद्रित हो चुके हैं। 13 अप्रैल 1961 को जब लोकसभा में अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक सहभाषा के रूप में लाने का विधेयक सरकार ने रखा। स्वामी जी ने इसका पूर्ण विरोध किया। मार्शल द्वारा आपको बलपूर्वक संसद के शेष सत्र के लिए निकाल दिया। परन्तु धर्मधुनि स्वामी जी इतना अपमान सहन करने के पश्चात भी हिन्दी की रक्षा के लिए और दृढ़ प्रतिज्ञ हो गये। भला परिश्रमी व्यक्ति कभी असफल होता है।

अन्त में **'सत्यमेव जयते'** के आधार पर स्वामी जी की विजय हुई और सरकार को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का अनुवाद भी प्रस्तुत करने को स्वीकृति देनी पड़ी।

श्री स्वामी जी श्रमिक वर्ण के प्रति भी सहानुभूति रखते थे चाहे वह खेत में हल चलाने वाला मजदूर हो या औद्योगिक क्षेत्र का सामान्य मजदूर। एक बार उनके संसदीय क्षेत्र यमुनानगर में श्री गोपाल पेपर मिल में मजदूरों पर अत्याचार हुए। स्वामी जी ने इस अत्याचार के विरोध में 10 जनवरी से 4 फरवरी 1964 तक पं. जवाहर लाल नेहरू प्रधानमन्त्री की कोठी पर धरना दिया।

आप ने 26 अप्रैल 1965 से 10 मई 1965 तक लोकसभा के प्रांगण में गोवध के विरोध में अनशन किया। आप 7 नवम्बर 1965 को संसद भवन पर गोभक्त प्रदर्शन कारियों को सम्बोधित करते हुए गिरफ्तार कर लिए गये और आप को तिहाड़ जेल में नजरबन्द कर दिया गया। 1965 में आम चुनाव में आप मात्र 19 मतों से पराजित हो गये।

देश एवं आर्य समाज की विषम परिस्थितियों ने इस बूढ़े सिंह को घायल कर दिया। वृद्धावस्था के चिन्ह स्पष्टतया दिखाई देने लगे शरीर भी जर्जर हो गया। इसी बीच एक और वज्रपात हुआ कि उनका प्रिय शिष्य आचार्य पं. धर्मवीर शास्त्री जो उनसे 40 वर्ष छोटे थे, जिसको उन्होंने पुत्रवत पाला, पढ़ाया, अपना उत्तराधिकारी बनाया, वह दिवंगत हो गया। श्री स्वामी जी की शारीरिक क्षीणता के साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति भी खराब होने लगी। उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता चला गया। डॉ. शिवकुमार शास्त्री जी ने बताया कि मैं 8 मई 1990 रात्रि के सात बजे आर्य समाज गुड़गांव में व्याख्यान देने के लिए जा रहा था कि गुरुकुल धरौण्डा के आचार्य नैष्टिक ब्रह्मचारी, तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी डॉ. देवव्रत जी का फोन आया कि श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का नश्वर शरीर नहीं रहा। 9 मई 1990 को उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

देश के विभिन्न प्रांतों में स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करने के लिए शोक सभाएं हुई। संसद में उनकी स्मृति में मौन रखा गया।

पुराने बुर्जुग

ऋषि राम कुमार

आजकल रिश्ते कुछ
उखड़े उखड़े से
जुड़े हुये जबरदस्ती लगते हैं।
परस्पर प्रेम बदल गया है कपट में
हर पग-पग पर कोई नई चाल?
कहाँ गये वो रिश्ते
जो जान भी दे देते थे,
आजकल जान ले लेते हैं।
क्या युग है
नई परम्परायें हैं
किसका विश्वास कहां तक करें।
कौन कब रास्ता बदल ले
मालूम नहीं।
अब याद आती हैं
पुरानी बातें
पुरानी यादें
पुराने बुजुर्ग।

- ऋषि राम कुमार
112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुरुग्राम (हरियाणा)

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने आर्य जाति की रक्षा, स्वतन्त्रता एवं अधिकारियों की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। गुरुकुल प्रणाली को प्रचारित कर अपने गुरु के प्रेरणा स्त्रोत अपने मार्ग दर्शक ऋषि दयाननद जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी। अपने शिष्यों को विद्वान् बनाया **'भूयश्च शरदः शतात्'** वेद की इस सूक्ति को जीवन में चरितार्थ किया।

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी की स्वयं रचित इस गीतिका की कुछ पंक्तियों से अपनी इस लेखनी को विराम दे रहा हूं।

हे ब्रह्मन संसार में क्या यह समय होगा कभी।
ब्रह्मवर्चस्वी निज देश वासी विप्र गण होंगे कभी।
वृष्टि समय पर हो सदा सब औषधि फूले फले।
सब वस्तु से सम्पन्न हो सब वेद मार्ग पर चलें॥

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर

हमारी महान विभूति 136वीं वर्षगांठ पर विशेष प्रस्तुति

1. स्वतन्त्रता संघर्ष में आपने बहुत कष्ट सहे क्योंकि आप अण्डमान-निकोबार की सैलुलर जेल में 26 वर्ष रहे और दो वर्ष तक नजरबन्दी में रहे।
2. वहाँ आप काल कोठरी में बन्दी रहकर कोल्हू में जूते और मूंज कूटते। राजग की सरकार ने उनकी काल कोठरी के बाहर पट्टिका लगा दी थी जिसमें संक्षेप में उनके बारे में जानकारी लिखी थी।
3. मनमोहन सरकार के मन्त्री मणिशंकर अय्यर जब सैलुलर जेल गए तो उन्होंने यह कहकर उस पटिट्का को हटवा दिया कि यह देश नेहरू-गाँधी की सोच का धर्मनिरपेक्ष देश है।
4. राजग की वाजपेयी सरकार ने संसद के केन्द्रीय कक्ष में भारी विरोध के बावजूद वीर सावरकर की फोटो तो लगवा दी थी लेकिन उनकी जयन्ति नहीं मनाई जाती थी।
5. 27 मई 2014 को प्रथम बार उनकी जयन्ती संसद में मनाई गई जिसमें प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी भी मौजूद रहे।
6. महाराष्ट्र तथा गुजरात की विधानसभा में भी वीर सावरकर का फोटो लगा हुआ है।
7. भाई परमानन्द के प्रयास से आप 1937-38 को हिन्दू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में आए और राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए।
8. आपने 1.1.1938 को ही घोषणा कर दी थी कि अब हिन्दू महासभा राजनीतिक दल है। आप लगातार 5 बार राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।
9. आपने आह्वान किया था कि राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण किया जाए।
10. आपकी मान्यता थी कि धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता बदल जाती है।
11. अनेक क्रान्तिकारियों-युवकों को आपने भिन्न-भिन्न तरीकों से कार्य करने की प्रेरणा दी थी।
12. आपने तर्क और प्रमाण देकर सिद्ध किया था कि अविभाजित भारत भी स्वाभाविक रूप से हिन्दू राष्ट्र है।
13. आपने असम के पहाड़ी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों, जम्मू-कश्मीर के विलय, तिब्बत सम्बन्धी कांग्रेस की सोच व नीतियों को राष्ट्र के विरूद्ध बताया था।
14. जिन्ना ने कहा था कि हिन्दुओं को सावरकरजी को अपना नेता मानना चाहिए और उन्हें ही हिन्दुओं की ओर से बोलना चाहिए।
15. हीन भावना से ग्रस्त, अभागे, दुर्बल, कमजोर, असंगठित, दुर्भागे हिन्दुओं को वीर सावरकर की बात कम पसन्द आई इसलिए हिन्दू महासभा छोटा दल ही रही।
16. आपने 1942 में कह दिया था कि कांग्रेस जैसी भाषा बोल रहे हैं उससे लगता है कि वे विभाजन के बिना देश को स्वतन्त्र नहीं करा पाएँगे।
17. 15 अगस्त 1947 को आपने राष्ट्रीय ध्वज के साथ हिन्दू महासभा का भगवा ध्वज भी फहराया था।
18. आपने पाकिस्तान से आबादी की अदला बदली करनी पसन्द की थी किन्तु नेहरू-गाँधी ने नहीं होने दी।
19. आपने कहा था कि खण्डित भारत में विभाजन के दोषी मुस्लिमों व ईसाइयों को वोट का अधिकार नहीं दिया जावे।
20. आपने पचास के दशक में नेपाल का संविधान बनाया था जिसमें नेपाल को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया गया था। अहिन्दुओं को वोट का अधिकार नहीं दिया था और वे धर्म प्रचार तथा धर्मान्तरण भी नहीं कर सकते थे। गोवध बन्दी लागू की गई थी।
21. आपको हिन्दू नाम पसन्द था क्योंकि देश-विदेशों में हमारी पहचान हिन्दू नाम से ही होती रही है।
22. आप 20वीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दू संगठक थे। हिन्दू का अर्थ है-जो हीन नहीं है, सब का हितैषी, सब का हितकारी, बुराइयों को दूर करने वाला।
23. 67 वर्षों में हजारों बार दंगे हुए जिनमें 18000 से ज्यादा लोग मारे गये।
24. यदि सावरकर जी का संविधान लागू होता तो एक भी दंगा नहीं होता। हिन्दू शेर की भाँति रहता, उसके चेहरों पर मुस्कान होती और सरकार 3032 मन्दिरों का जीर्णोद्वार करके देती।
25. साथियों, सावरकरजी की बात न मानने से हम नुकसान में रहे, अभी भी नुकसान में हैं और भविष्य में भी नुकसान में रहने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। ईश्वर हिन्दू को सद्बुद्धि दे।

- इन्द्रदेव गुलाटी टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर

11 जून जयन्ती

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल

- कृष्णा मोहन गोपाल

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

कहा जाता है-सरदार भगतसिंह पर जिन दिनों 'एसेम्बली-बम काण्ड' का मुकदमा चल रहा था, तब जेल से कचहरी जाते समय व जोर-जोर से यही गीत गाते हुए जाते थे।

उन दिनों क्या, आज भी आजादी के बाद जब भी सरकार के विरोध में कोई आन्दोलन होता है तो आन्दोलनकारी 'सरफरोशी की तमन्ना' वाला गीत गाना शुरु कर देते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है जितना आजादी की लड़ाई के दिनों में था। इस गीत के आगे के चार पद भी इतने ही जोशीले है। अंतिम पद देखिये:-

अब न अगले बलबले है और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'विस्मिल' में है।

इस अंतिम पद में 'बिस्मिल' शब्द आया है, जिससे स्पष्ट है कि प्रस्तुत गीत के रचयिता बिस्मिल थे-बिस्मिल यानी राम प्रसाद बिस्मिल। ये पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल कवि तो थे ही, साथ ही प्रथम पंक्ति के क्रांतिकारियों में से भी एक थे।

उनके बारे में प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्व. मन्मनाथ गुप्त ने अपने 'क्रांतिकारी-आन्दोलन का इतिहास' में लिखा है-काकोरी षडयंत्र में जिन चार व्यक्तियों को 1927 में फाँसी की सजा दी गई थी, उसमें रामप्रसाद बिस्मिल सबसे पुराने क्रांतिकारी थे। उन पर सबसे ज्यादा अभियोग भी थे, क्योंकि वे क्रांतिकारी दल के हिंसा-विभाग के नेता थे।

राम प्रसाद जी का जन्म उत्तर प्रदेश (तब के संयुक्त प्रांत) के शाहजहांपुर में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी सम्वत् 1958 को हुआ था और वही उनकी शिक्षा-दीक्षा भी हुई। बाद में. रामप्रसाद जी ने एक साथी के साथ मिलकर हथियार चलाना भी सीख लिया। तब तक उनमें राजनीतिक जागृति नहीं आयी थी। लेकिन इसी बीच उनके शहर में लोकमान्य तिलक आये और छात्रों और मॉडरेटों में नोंक-झोंक के कारण युवकों ने अलग रास्ता अपनाकर मॉडरेटों की इच्छा के विरूद्ध, लोकमान्य तिलक का शहर में ही अभूतपूर्व स्वागत किया जबकि मॉडरेट उनके नागरिक स्वागत के पक्ष में नहीं थे।

उन्हीं दिनों युवकों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए समिति की ओर से एक पुस्तक-'अमेरिका ने अपनी आजादी कैसे प्राप्त की? लिखी गई। पर समस्या थी उसकों छपवाने के लिए पैसे का प्रबंध। तो रामप्रसाद जी ने अपनी माँ से रोजगार करने के नाम पर दो सौ रूपये उधार मांग लिए। उससे पुस्तक छपायी गई, बेची भी गई और इस प्रकार पैसे हाथ में आने पर माँ से उधार प्राप्त दौ सौ रूपये भी लौटा दिये गये।

सब हुआ, पर जब अंग्रेजी सरकार को उस पुस्तक की भनक लगी, तो उसने वह पुस्तक जब्त कर ली, फिर भी रामप्रसाद जी येन-केन से लुक-छिप कर पुस्तक बेचते भी रहे। जिस कारण उनमें गिरफ्तारी का परवाना भी निकल आया। इसी बीच में दिल्ली कांग्रेस में शामिल होकर जब लौटे तो उन्हें पता चला कि उनके नाम पर एक और वारंट लिए पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने को ढूंढ़ती फिर रही है क्योंकि सरकार मान रही है कि मैनपुरी षडयंत्र में पण्डित मेवालाल दीक्षित के साथ रामप्रसाद जी भी उसमें शामिल थे। वहाँ से फरार होने में ही उन्हें भलाई दिखी।

एक दिन जब लखनऊ किसी काम से गये तो वहां अचानक उनकी भेंट शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा जोगेशचन्द्र चटर्जी से हो गयी। उन्हीं लोगों के आग्रह पर बिस्मिल ''हिन्दुस्तान रिपब्लिन एसोसियशन'' के सदस्य बन गये। इस प्रकार उनका स्थगित कार्य प्रारम्भ हो गया। उन्हें उत्तर प्रदेश का जिला संगठनकर्ता बना दिया गया। उन्हीं दिनों जनता के बीच वितरित कराने के लिए एसोसियेशन की ओर से अंग्रेजी में एक पर्चा छपवाया गया। वितरक का नाम दिया गया 'द रेवोल्यूशनरी'।

उस वितरित किये गये पर्चे के भाव कुछ इस तरह के थे उथल-पुथल से ही नया सितारा उगता है.

...... पीड़ा और कष्ट से ही नए जीवन का जन्म होता है.... जब हम जागेंगे तो चालाक और शक्तिशाली लोग सीधे-सीधे और कमजोर लोगों के सामने अंचभित हो जाए। नौजवान भारतवासियों! अपने मन के भ्रम को उतार फेकों और साहस के साथ असलियत का सामना करों। अमन-चैन तुम्हें मिल नहीं सकता और शांतिपूर्ण और कानूनी तौर से भारत को आजादी मिलने से रही.... विदेशियों को भारत से खदेड़ना ही पड़ेगा. ..... क्रांतिकारी इसे भूलेगें नहीं कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उन हजारों अनजाने देशवासियों के बलिदान से होता है जो अपने सुख, स्वार्थ से अधिक की परवाह करते है। इतना सब लिखा होने के बाद अन्त में लिखा था-विजय कुमार, अध्यक्ष सेन्ट्रेल काउंसिल, 'दि रिपब्लिकन पार्टी।

इस काण्ड के संबंध में बिस्मिल जी ने अपनी ''आत्मकथा'' में लिखा है-''काकोरी डकैती बाद पुलिस सक्रिय हो गयी। पुलिस के कुछ विशेष सदस्य मुझ से भी मिले। कुछ मित्रों ने मुझसे कहा भी कि सतर्क रहो। इसके बाद पुलिस मुझे बिना हथकड़ी डाले गिरफ्तार कर ले गई। कोतवाली मेरे सिवा बस मेरा एक विश्वसनीय मित्र ही जानता था। मुझे आश्चर्य और दुःख भी हुआ बाद में पता चला शाहजहांपुर में और लोग भी गिरफ्तार हुए है जो अलग-अलग जेलों में रखे गये है। उनमें एक बनारसी लाल ने मुखबिर होकर अपना बयान दे दिया था। मुझ पर दफा 120, 121, 302, 396 के अनुसार अभियोग में मुकदमा चला। सरकार की ओर से आनन्दनारायण मुल्ला इस मुकदमें की पैरवी कर रहे थे। उन्हें रोज पाँच सौ रूपये पारिश्रमिक मिलते थे।

तो इस प्रकार रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथियों के विरूद्ध काकोरी षडयन्त्र सम्बन्धी मुकदमा शुरु हो गया। सरकारी पक्ष के वकील मुल्ला साहेब रहे। श्री मन्मथनाथ गुप्त की पुस्तक ''क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास'' से ऐसी जांनकारी मिलती है कि अभियुक्तो की सफाई के लिए पण्डित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति बनी जिसमें जवाहर लाल नेहरू, गणेश शंकर विद्यार्थी, शिव प्रसाद गुप्त, श्री प्रकाश, आचार्य नरेन्द्र देव आदि का विशेष सहयोग रहा।

अभियुक्त की पैरवी के लिए कलकत्ता से बी. एम.चौधरी बेरिस्टर नियुक्त किये गये। उनकी मदद के लिए गोविन्द बल्लभ पंत, चन्द्रभानु गुप्त, आर.एफ. बहादुर तथा मोहनलाल सक्सेना जैसे वकीलो ने भागीदारी दी। मुकदमा अट्ठारह महीने तक चला। इस बीच इन राजनीतिक कैदियों के साथ जेल अधिकारियों के अमानुषिक व्यवहार को लेकर सभी ने अनशन भी कर दिया था और वह मुकदमा क्या था वह मुकदमा का नाटक था। फैसले के अनुसार रामप्रसाद बिस्मिल और उनके दो साथियों, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशनसिंह को फांसी की सजा सुनाई गई। अन्य साथियों को काला पानी तथा जेल काटने की सजा मिली।

राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में दिनांक 19 दिसम्बर, 1927 को फासी दे दी गई। दिल्ली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. उमा शंकर ने अपनी पुस्तक 'आजादी के खातिर' बिस्मिल के फाँसी दिये जाने के संबंध में लिखा है फाँसी के तख्ते पर चढ़कर वे बुदबुदाये थे।

मालिक तैरी रजा रहे और तु ही तु रहे,
बाकी न मैं रहुं, न मेरी आरजू रहे।
जब तक है तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरी ही जिक्र या कि तेरी जुस्तजू रहे॥

फिर उन्होंने अपने हाथ से फंदे को गले में डाल लिया था और ऊँची आवाज में कहा था-'आई विश द डाउनफॉल आफ द ब्रिटिश एम्पायर।

कहते है कि कैदखाने में वे अपनी आत्मकथा लिखते रहे थे, बाद में वह उनके एक मित्र के हाथ लग गई। इतना ही नहीं, यह भी पता चला है कि फांसी के लिए जाने से पूर्व उन्होंने अपने एक मित्र को एक पत्र भी लिखा था। उसमें उन्होंने लिखा था-''19 तारीख को जो कुछ होने वाला है, उसके लिए मैं अच्छी तरह तैयार हूँ। यह है ही क्या? केबल शरीर का बदलना मात्र है। मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन सन्तति के नये उत्साह और आज के साथ काम करने के लिए शीघ्र ही फिर लौट

आयेगी। उन्होंने एक कविता भी लिखी थी-

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रो बार भी,
तो भी न मै इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु के देशोपकारक कर्म हो।
यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रो बार भी,
तो भी न मै इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत-बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु के देशोपकारक कर्म हो।
मरते बिस्मिल, रोशन, लहेरी, अशफाक अत्याचार से,
होगे पैदा सैकड़ो उनके रूधिर की धार से।
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का,
तब नाश होगा सर्वादा दुःख शोक के लब-लेश का।

अन्त में यह भी बता दूँ कि फांसी के बाद, बहुत कहा-सुनी करने पर बिस्मिल की लाश उनकी माताजी को सौंप दी गई, जिसे लेकर शहर में जुलूस निकाला गया था। उस जुलूस को बीच में ही रोक उनकी स्नेहमयी वीरांगना माताजी ने जनता के बीच निम्नांकित उद्गार प्रकट किये थे-''आपसे कहने की आवश्यकता नहीं है कि मेरे जैसी माँ संसार में इनी-गिनी हैं। मेरे राम ने न केवल मेरी कोख की लाज रखी है बल्कि आप सबको रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर आप एक-न-एक दिन देश को अवश्य आजाद करा लेगें। मेरे पास देश को देने के लिए कुछ नहीं है। यही राम का छोटा भाई है। इसे मैं जयदेव कपूर के हाथों सौंपती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे इसे भी राम जैसा ही बनाए। यह भी अपने बड़े भाई के पदचिन्हों पर चल हँसते-हँसते फाँसी पर झूल जाए, यही मेरी अभिलाषा है। ''वन्दे मातरम्।

ऐसे थे अमर शहीद बिस्मिल और ऐसी थी उनकी स्नेहमयी वीरागंना माताजी। दोनों हमारे लिए अनुकरणीय है। शत्-शत् प्रणाम्।

- 113, बाजार गेट, अमरोहा-244221

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006
फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सूची

श्रीमती कविता देवी धर्म श्री अनिल कुमार जी नेहरू पार्क,ब. 5100/-
श्री सरताज सुपुत्र श्री हर्षराज जी नेहरा सैक्टर-6, बहा. 5100/-
प्रिं कर्ण सिंह जी डबास माजरा दिल्ली द्वारा संग्रह 5000/-
श्रीमती अशोक कुमारी देवी धर्म श्री विक्रम विजय विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़ 3100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सराहवत सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 2500/-
श्री प्रदीप जी लोहचब सुपुत्र श्री यशवीर सिंह जी लोहचब देव नगर, बहादुरगढ़ 2100/-
श्री हर कमल जी ओमैक्स सीटी बहादुरगढ़ 2000/-
श्री विराट राठी सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र राठी सांखोल बहादुरगढ़ 1100/-
श्री रामप्रताप जी आर्य नरवाना, हरियाणा 1100/-
श्री महेश जी इन्ड्रीटीज एरिया फेस-1, मंगोलपुरी, दि. 1100/-
श्री सुरेन्द्र जी बुद्धिराजा कीर्तिनगर, दिल्ली 1100/-
श्री महेन्द्र सिंह जी ओहल्याण गढ़ी, सांपला 1100/-
श्री मोनू जून गुरु नानक कॉलोनी, बहादुरगढ़ 1100/-
श्री गौरव जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1100/-
श्री नक्ष सुपुत्र श्री वरूण चड्डा राजौरी गार्डन, दि. 1100/-
श्री सोनू जी सौकिन सुपुत्र श्री सत्यपाल जी शौकिन ग्राम-मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली 1000/-
श्री महेश जी दहिया सैक्टर-9, बहादुरगढ़ 1000/-
श्री गिरधर जी परिवार पश्चिम विहार, दिल्ली 1000/-
श्री शरद जी सुपुत्र श्री प्रभुदयाल जी ठुकराल मनोहर नगर,दि. 600/-
श्री राजेश जी सु. श्री राजेन्द्र जी अहलावत बहादुरगढ़ 511/-
श्री मा. सुखवीर सिंह सुपुत्र दुनीराम जी कटवासरा बहादुरगढ़ 511/-
श्री मा. रामचन्द्र जी हुड्डा अध्यापक कॉलोनी बहादुरगढ़ 501/-
श्री भानु जी रूहिल सुपुत्र श्री दलवीर सिंह जी रूहिल, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ 500/-
श्रीमती श्रुति आर्या उपदेशीका सुपुत्री श्री रामदेव जी आर्य, भोर, रोहतक 500/-
श्री अनिल कुमार जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ 500/-
श्री जितेन्द्र जी खरबन्दा कीर्ति नगर, दिल्ली 500/-
ए.एल.एल.एक्स दिल्ली 500/-
श्री कैलाश जी लखोटिया मॉडल टाऊन बहादुरगढ़ 500/-
श्री सुखदेव जी ग्रोवर महावीर नगर, बहादुरगढ़ 500/-
श्री सुधांशु जी सुपुत्र श्री अंगिरा मुनि आर्य सोलदा झज्जर 500/-
श्री प्रिय रतन जी गुप्ता एच.एन. जी बहादुरगढ़ 500/-

गौशाला हेतु दान

श्री योगेश जी सुपुत्र श्री वेदपाल जी आर्य महावीर पार्क, बहा. 1040/-
श्रीमती निर्मला देवी जी धर्मपत्नी श्री बालराज सिंह जी दहिया टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़ 500/-
डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, अध्यापक कॉलोनी,बहा. 1100/-
श्रीमती श्वेता देवी जी छिलर बामडौली 60 किलो दलिया

विविध वस्तुएं

पिस्तो देवी धर्म श्री राम कुमार जी मित्तल अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़ आटा 25 किलो, आलु 25 किलो, 1 किलो रिफाईण्ड, केला 6 दर्जन, हवन सामग्री 2 किलो
फरिश्ता सोप एण्ड चरखा कै. फैक्ट्री दिल्ली 1 कट्टा सरफ
श्री वीरेन्द्र जी गोयल कीर्तिनगर, दिल्ली 8 फौम आसन
पं. ईश्वर सिंह जी शक्ति नगर, बहा. कॉपी 32, पैन-पैन्सिल 100
श्रीमती कृष्णा देवी धर्म श्री रामकुमार जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 100 रजिस्टर 50 पैन
श्री दिपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां, दि. 1 टीन सरसो तेल
श्री शुक्ला जी नैनपाल की मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली 10 किलो सरसों का तेल

एक समय विशिष्ट भोजन देने वाले

श्री रामदेव जी आर्य वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ एक समय का विशेष भोजन
कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पंवार वैद्धिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ एक समय का विशेष भोजन
श्रीमती कृष्णा देवी जी धर्म श्री रामकुमार जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ एक समय का विशेष भोजन
श्री पवन कुमार जी बंसल सैक्टर-9 ए, बहादुरगढ़ एक समय का विशेष भोजन
श्री संजय जी भारद्वाज रोहिणी दिल्ली एक समय का विशेष भोजन
श्रीमती ललिता दीवान विकास पुरी दिल्ली एक समय का विशेष भोजन

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष–41548503, चलभाष–9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मई 2019 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें　　ओ३म्　　आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु चार दिवसीय पावन ग्रीष्म ऋतु में

निःशुल्क योग एवम् आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर

तथा

ऋग्वेद मंडल दो बृहद् यज्ञ

गुरुवार 27 जून से रविवार 30 जून 2019 तक

सानिध्य:- **स्वामी धर्ममुनि जी महाराज** (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

प्रमुख वक्ता एवम् शंका समाधानकर्ता:- **श्री स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक,**
(दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ अहदाबाद, गुजरात द्वारा)।

शिविर उद्घाटन गुरुवार 27 जून

4 बजे से 5:30 बजे तक यज्ञ एवम् शिविर उद्घाटन
5:30 बजे से 6:30 बजे तक प्रवचन तत्पश्चात् ब्रह्मयज्ञ शान्ति पाठ

28 जून एवम् 29 जून का कार्यक्रम

प्रातः 5 बजे से 6:30 बजे तक आसन, प्राणायाम एवम् योगाभ्यास, 7:30 बजे से 8:30 बजे तक यज्ञ, भजन, आशीर्वाद आदि, 8:30 बजे से 9:30 बजे तक प्रवचन, 11 बजे से 12 बजे तक योग दर्शन स्वाध्याय, सायं 4 बजे से 5:30 बजे यज्ञ भजन आशीर्वाद, 5:30 बजे से 6:30 बजे तक प्रवचन एवम् शंका समाधान

रविवार 30 जून का कार्यक्रम

प्रातः 5 बजे से 6:30 बजे तक आसन, प्राणायाम एवम् योगाभ्यास,
8 बजे से 10 बजे तक यज्ञ पुर्णाहुति, भजन आदि,
10:30 बजे से 12 बजे तक प्रवचन, शंका समाधान आदि, 12 बजे सामुहिक भोजन

नोट- -शिविर मध्य महिलाएं भी भाग ले सकती हैं। ❑ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आएँ। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट मेट्रो पीलर न. 819 पर है।

संयोजक:
राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

सत्यानन्द आर्य प्रधान ट्रस्ट, 9313923155	दर्शन कुमार अग्निहोत्री मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799	सत्यपाल वत्सार्य उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359
कन्हैयालाल आर्य उपप्रधाम ट्रस्ट, 9911197073	विक्रमदेव शास्त्री व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062	

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507, मो. 9416054195

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
मई 2019
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातः राश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों पर नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में पहला कमरा 31,000/-, दूसरा कमरा 51,000/-, तीसरा कमरा 1,00,000/-, तीसरी मंजिल पर 3,00,000/- में कमरा बनवा सकते हैं। आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद!

–व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195